RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

दिसम्बर-2024 | वर्ष - 16 | अंक : 11 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक
पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020
IFSC CODE-SBIN0001784

बाबासाहब का 'वह' विधान उनकी हत्या का कारण बन गया।

बाबासाहब 1936 से 1956 तक बौद्ध धर्म स्वीकार करने की तैयारी कर रहे थे। 1956 का वर्ष उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के चुना। कारण उस समय बुद्ध को जन्मे 2500 वर्ष पूरे हो गये थे। 14 अक्टुबर की तारीख इसलिए चुनी गई की उस दिन दशहरा भी था। पुष्यमित्र शुंग ने जब प्रतिक्रांति की तब उसने बौद्ध राजा और बौद्ध भिक्खुओं का नरसंहार किया। बौद्ध धर्म समाप्त प्रायः करने के लिए ब्राह्मणों ने युक्ती, बुद्धि, तर्क और चर्चा का सहारा नहीं लिया परंतु घूसखोरी (भ्रष्टतंत्र) और षड़यंत्र का सहारा लिया। पुष्यमित्रने प्रतिक्रांति करने के बाद रामायण और महाभारत की रचना कराई। रामायण में राम-रावण युद्ध दर्शाया। रावण का एक सिर न बताकर दस सिर बताये गये। और राम के हाथों उसका वध होता है इसलिये 'दशहरा' कहा गया है। 'दशहरा' इसका अर्थ दस सिर जिसमें हैं अर्थात रावण को हराया (वध किया) परन्तु उसके दस सिर क्यों हैं? ब्राह्मणों ने प्रतिनिति काऊन्टर (डिप्लोमॅटिक पालीसी) के रूप में यह संकल्पना (मिथक) का उपयोग किया। बौद्ध अनुशासन में त्रीशरण, पंचशील, अष्टांगिक मार्गय, दस पारमिता है। युरेशियन ब्राह्मण ने षड़यंत्र करके वो दस पारमिताएं नष्ट कर दिया और उसी के प्रतीक रूप में राम ने दस सिर वाले रावण का सर्वनाश किया ऐसा प्रचार किया। और जिस दिन यह षड़यंत्र उसने किया, वह दिन था आश्विन महीने का दसवाँ दिन अर्थात आश्विन दशमी। सम्राट अशोक ने जिस दिन बौध धर्म स्वीकार किया अर्थात उसने स्वतःपर ही विजय प्राप्त किया इसलिये उसे अशोक विजयदशमी कहते हैं। वह दिन सैकड़ों वर्ष लोक-उत्सव के रूप में मनाया जाता रहा। परंतु ब्राह्मण ने प्रतिक्रांति कर वह प्रेरणा नष्ट कर दी। उसके बदले 'दशहरा' बैठा दिया। बाबासाहब ने उसी दिन धर्म परिवर्तन कर पुनः सम्राट अशोक की महान परंपरा पुनर्जीवित की।

दिनांक 24 अक्टुबर 1956 का वह क्षण इतना अद्वितीय था कि, संसार के लोग आश्चर्य व्यक्त करने लगे। उस दिन 6 से 7 लाख लोगों ने धम्मदीक्षा ग्रहण की। बौद्ध धर्म स्वीकार करने के कारण बाबासाहब का आंदोलन अब अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका था। परन्तु टाईम्स आफ इंडिया समाचार पत्र को वह कार्यक्रम इतना खटका की, उसने केवल 75 हजार लोग उपस्थित थे, ऐसा झूठा समाचार छापा। इतना ही नहीं तो **केसरी** और **सकाल** की कटिंग्ज सविताबाई ने सिम्बॉयसिस के दालन में लगा दिया जिससे लोग भ्रमित हुये। इस हरकत से भी सविताबाई की लायकी का पता लगता है। सविताबाई यहीं नहीं रूकी बल्कि जिस समाचारपत्र में **'हरीजन बौद्ध हो गये'** ऐसा विकृत समाचार छपा, उसका संग्रह सविताबाई ने सिम्बायसिस में संग्रह करके रखवा दिया। इसके साथ ही टाईम्स आफ इंडिया के सात दिसम्बर के अंक में 'Mr. Nehru Tribute to Harjan Leader' ऐसा गैर संवैधानिक शब्दों का प्रयोग कर स्वाभीमानी आंदोलन का अपमान किया।

बौद्ध धर्म स्वीकार करने से पूर्व ही बाबासाहब ने बौद्धों के प्रतीक, संकल्पना प्रत्यक्ष रूप में साकार करना आरम्भ कर दिया था। बुद्ध जयंती मनाना आरम्भ कर दिया। जागतिक बौद्ध सम्मेलन में भारत में बौद्ध धर्म की वापसी पर उनकी चर्चा बहुत व्यापक थी। बौद्ध धर्म, यह भारतीय धर्म है और इसी धर्म से हमारा कल्याण होगा। परन्तु बौद्ध धर्म की स्वीकृति ब्राह्मणों की आँखों में शूल बनकर चुभ रही थी। इसमें सभी तरह के ब्राह्मणों का समावेश था। कुछ अज्ञानी लोग, नेहरू को बुद्ध बहुत प्रिय थे, ऐसा बरगलाते है। परन्तु उसमें कोई तथ्य नहीं है। नेहरू को बौद्ध राजा व तथागत बुद्ध के प्रति भयंकर द्वेष था। इसीलिये नेहरू शंकराचार्य को विशेष सहुलियतें देकर कुम्भ मेले में धन लुटा रहे थे। स्वंय को धर्म निरपेक्ष कहने वाला नेहरू सनातनी था। एक बार बाबासाहब ने एक सभा में कहा था। यह नेहरू कुम्भ मेले में सरकारी धन खर्च करता है, मैं यदि मंत्री होता तो नेहरू को जेल में सड़ा देता। एक बार तो नेहरू को ठाणे में मानसिक रूग्णालय में रखो, ऐसा भी व्यंग बाबासाहब ने किया था। नेहरू **ब्राह्मणीराज्य** स्थापित कर रहे थे और वैसा करने के लिये उसने सब प्रकार से प्रयत्न किया।

नेहरू और राधाकृष्णन का बौद्ध धर्म के प्रति द्वेष का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है। 1956 में भारत सरकार बुद्ध जयंति मनाने वाली थी। नेहरू, बौद्ध राष्ट्रों के लिये एक नाटक करने वाले थे। सरकार बुद्ध पर कुछ विद्वानों के ग्रंथ प्रकाशित करने वाली थी। नेहरू का यह कार्य बुद्ध के प्रति आस्था दर्शाना मात्र एक ढ़ोंग था। यह ढ़ोंग को उजागर करने वाले कुछ प्रमाण हमारे पास है। बाबासाहब ने दिनांक 14 सितम्बर, 1956 को पत्र लिखा और बताया की, 'बुद्ध और उनका धम्म' यह ग्रंथ तैयार है। वह ग्रंथ सरकार ने बुद्ध जयंति के अवसर पर छापकर बौद्ध राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को भेंट दें। परन्तु नेहरू को अंदाज आ गया की, बाबासाहब आम्बेडकर के ग्रंथ भी ब्राह्मणवाद के लिए घातक हैं। नेहरू ने ऐरे गैरे व्यक्तियों की निष्क्रीय कलाकृतियों पर पैसे खर्च किये परंतु बाबासाहब के उस ग्रंथ के लिये फंड खत्म हो गया है ऐसा कहा। परंतु बुद्ध जयंती समिति के अध्यक्ष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पास विचारार्थ तुम्हारा पत्र भेज दिया है, यह उत्तर दूसरे दिन ही भिजवा दिया। उधर! सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने बाबासाहब का ग्रंथ प्रकाशित करने से साफ इन्कार करते हुये कारण बताया की फंड नहीं बचा है। नेहरू को यह बात भली प्रकार मालूम थी की बाबासाहब शीघ्र ही बौद्ध धर्म स्वीकार करने वाले हैं। नेहरू ब्राह्मण और सर्वपल्ली भी ब्राह्मण। वे बुद्ध को अवतार मानते थे। और बौद्ध राष्ट्रों को मूर्ख बनाने के लिये दुष्ट हेतु से प्रेरित होकर कुछ पुस्तकें छापी जा रही थीं। इस घटना से नेहरू और राधाकृष्णन का बुद्ध के प्रति और बाबासाहब के प्रति कितना तिरस्कार था यह प्रगट होता है।

जब बाबासाहब ने लाखों अनुयाईयों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किया तब नेहरू और राधाकृष्णन को अच्छी

तरह समझ में आ गया कि अब भारत में पुनः बौद्ध धर्म के आगमन से वैदिक धर्म जड़मूल से उखड़ जायेगा। इसीलिये इसी मंडलीने यह दुष्प्रचार शुरू किया की अस्पृश्यो ने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद उनको प्राप्त सुविधायें खत्म हो जायेंगी। कांग्रेस धर्मांतरण के भयंकर परिणामों का अनुभव करने लगी थी। पूरे ढ़ाई हजार वर्षों के बाद डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने प्रतिक्रांति को मुंह तोड़ उत्तर दिया था। ब्राह्मणी धर्म पर वह जबरदस्त जख्म था। उस समय और उसके बाद कांग्रेस को उस घटना के स्मरण मात्र से यातना होती थी। उदा. जब धर्मांतरण के 25 वर्ष पूर्ण हो गये तब बाबू जगजीवन राम को साथ में लेकर उसके विरोध में प्रचार करने के लिये लगा दिया। जगजीवन राम ने बयान दिया की, मैं भी अब धर्मांतरण करूँगा और इस्लाम धर्म कबूल करूंगा। धर्मांतरण के बाद मेरा नाम जहांगीरखान होगा, ऐसा भी घोषित किया। यह प्रतिक्रिया कांग्रेस की ओर से और इंदिरा गांधी के इशारे पर थी।

बौद्ध धर्म स्वीकारना, यह नेहरू और ब्राह्मण जाति के लिये बहुत बड़ा जख्म था। कांग्रेस और संघ परिवार को बहुत यातना हुई। सावरकर जो प्रारम्भ से ही बाबासाहब के धर्मांतरण की घोषणा के विरोध में जहर उगल रहे थे, नरक उगल रहे थे, वे सभी ब्राह्मण एक हो गये। अनौपचारिक पद्धति से कांग्रेस सहित सब एक जुट हो गये थे, बौद्ध धर्म स्वीकारने के बाद हम राजकीय जीवन में भी आमूलाग्र बदल लायेंगे, व्यापक आधार पर हमारा राजकीय पक्ष होगा बाबासाहब की इस भूमिका से शंकराचार्य और नेहरू अस्वस्थ हो गये थे।

इन घटनाओं के पश्चात नवम्बर 1956 में काठमांडू (नेपाल) में बौद्ध धर्म परिषद में डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर भाषण देने गये। ठीक उसी समय बाबासाहब के विरोध में एक मुकदमे का नतीजा कांग्रेस ने ही लगाने का आदेश दिया, ताकी वे अपना दौरा रद्द कर सकें। ऐसी ब्राह्मणवादियों की इच्छा थी। बाबासाहब काठमांडू अंततः गये ही और वहाँ उन्होंने एक मौलिक विषय पर भाषण दिया। बाबासाहब उस परिषद में चर्चा व आदर का विषय बन गये थे। बाबासाहब ने वहाँ एकत्रित सभी बौद्ध राष्ट्रों के प्रतिनिधियों से अपील की कि 'बौद्ध धर्म अपनी भूमिपर पुनः वापस आ गया है।' उन्होंने पिन पॉइन्टेड आवाहनही किया–

''आज इस सम्मेलन सत्र के उद्घाटन के अवसर पर इस समारोह में उपस्थित संसार के बौद्ध, विशेषकर बौद्ध भिक्खूओं से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने भारतीय बौद्ध बंधुओं की रक्षा करें। उनको धर्म के सदाचरण की शिक्षा दें। कई सदियों के बाद उन्होंने अपने पुरखों के धर्म को पुनः अपनाया है। उन्हें हिन्दुओं के अमानवीय अत्याचारों से बचाना होगा। सभी हिन्दू किसी न किसी रूप में, यहाँ तक कि अनिश्वरवादी होते हुए भी, बामणवाद मानते हैं। इसलिए बौद्ध धर्मावलम्बी गरीब जनता उन सब के कोप की भागीदार बनेगी। **अगर मुझे मेरे गिरते हुए स्वास्थ्य ने साथ दिया और मैं जीवित रहा तो दो वर्षों के अन्दर मैं सारे भारत को बौद्धमय बना दूँगा।''** बाबासाहब का यही विधान अंत में उनकी मृत्यु का कारण बन गया।

इसलिये युरेशियन ब्राह्मणों को जल्दी से जल्दी डॉ. बाबासाहब की हत्या करना आवश्यक लगने लगा। बाबासाहब ने बार बार यह घोषणा की थी कि, ''बौद्ध धर्म की लहर (लाट) अब पुनः वापस नहीं जायेंगी'' ब्राह्मणी धर्म को इसी बौद्ध विचारधारा से धोखा था। ब्राह्मणों को यदि डॉ. आम्बेडकर जीवित रहे तो भयंकर धोखा लगने लगा था। कारण 1954 में ब्रम्हदेश की जागतिक बौद्ध परिषद में उन्होंने अपनी योजना प्रस्तुत की थी। 1956 तक उन्होंने उस पर अमल भी किया था। उसी के अनुसार बुद्धिस्ट बायबल (1) 'बुद्ध और उनका धर्म' ने उसकी पूर्ति भी की (2) भिक्षू संघ की पुनर्स्थापना की योजना (3) बौद्ध धर्म से ब्राह्मणवाद को अनुकूल होने वाली बातें दूर करना (4) धर्म के प्रचारकों का निर्माण करना (5) मद्रास, मुम्बई, नागपुर और दिल्ली इन चार महत्वपूर्ण शहरों में बौद्ध केंद्र विहार का निर्माण करना, इत्यादी महत्वपूर्ण बातें थी। अंत में एक संदेश भी उस प्रसंग में दिया गया था की, ''बौद्ध धर्म का ब्राह्मण ही सबसे बड़ा शत्रु है। ब्राह्मण यह किसी पक्ष में जाये, या कोई भी रूप वह धारण करे तब भी वह ब्राह्मण ही रहता है। कारण वह वर्ण व्यवस्था पर आधारित सामाजिक असमानता कायम रखना चाहता है।'' ब्राह्मण स्वयं आगे बढ़कर वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था नष्ट करने को कभी तैयार नहीं होगा। ब्राह्मणों को बौद्ध धर्म में घुसपैठ नहीं करने देना। यदि घुसपैठ करने का अवसर मिला तो वे (पुनः) बौद्ध धर्म नष्ट कर देंगे।

काठमांडू के दौरे तक उन्होंने बौद्ध धर्म की पुर्नस्थापना के लिए संपूर्ण योजना तैयार कर दी थी। 16 दिसम्बर, 1956, को मुम्बई में महाविशाल धर्मदिक्षा कार्यक्रम निर्धारित किया गया था। इसके बाद उत्तर प्रदेश, पंजाब, मद्रास, बिहार, के साथ–साथ विभिन्न राज्यों में ये लहर फैलने वाली थी। पहले पड़ाव में एससी, एसटी, के लोग इस धर्म में धर्मांतरित करने वाले थे। और उनके पश्चात ओबीसी लोगों को भी अपने मूल धर्म का परिचय करा देने वाले थे। उत्तर प्रदेश में ओबीसी ने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के लिए कुछ बैठकें ली थी। ब्राह्मण जातियों को यह आकलन करने के लिये समय नहीं लगा। बाबासाहब के साथ ब्राह्मणों की गुप्तचर सविताबाई थी। पिछले आठ वर्षों से वह यही कार्य कर रही थी। अंत में जहरीला डंक मारा (ही) और ब्राह्मणवादियों का षड़यंत्र सफल हो गया।

हजारों वर्ष के बाद बहुजन समाज को इतना महान व दृढ़ नेतृत्व मिला है, इसलिये ब्राम्हणों को भय लगने लगा था। बाबासाहब पुनः प्रतिक्रांति समाप्त करके क्रांति स्थापित करेंगे, इसकी भी समझ उन्हें हो गई थी, वे बहुजन समाज को शासक बनायेंगे। शासक बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन और विचारधारा तैयार है। ब्राह्मणवादियों को पुनः ब्रहद्रथ की हत्या का स्मरण हो गया। और उन लोगों ने बहुजनों के महापुरूष डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की हत्या को अंजाम तक पहुंचा दिया।

साभार :
बाबा साहब अम्बेडकर की हत्या किसने, क्यों और कैसे की
पृ.सं. 195 से 199 तक।
लेखक : विलास खरात

फास्ट फूड एवं दूषित आहार दे रहा रोगों को जन्म : डॉ. अजय मित्तल

अलीगढ़। आजकल देखा जा रहा है कि बाहर के खाने की लत समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, खासकर युवाओं में जो शहरों में रहते है वह बाहरी डिब्बाबंद खाने के शौकीन होते जा रहे हैं।

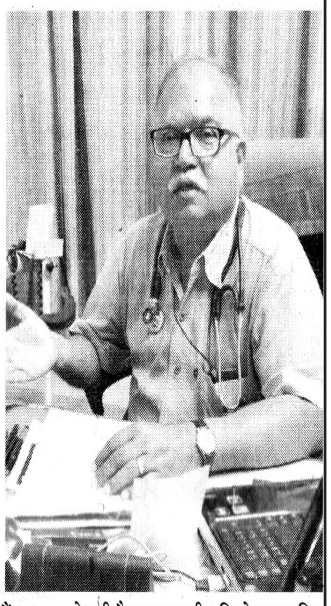

नियमित लेने से ऐसा भोजन शरीर को वह पोषण नहीं देता, जो घर पर बनाये हुए भोजन में होता है। दाल, दही, साग, हरी पत्तेदार सब्जियां, दूध का सेवन जो करते है वह बहुत सी बीमारियों से बचे रहते हैं एक सवाल क जबाव में उन्होंने बताया कि दौड़ धूप वाली जिन्दगी मानसिक तनाव जो अनियमित दिनचर्या के अनुसार पैदा कर लिया है। वह ह्रदय रोगों को बढ़ावा दे रहा है, नींद फाइवर एवं एंटी ऑक्सीडेन्ट के अभाव में ह्रदय रोग पनप रहे हैं जिसमें ऐसी बीमारियां पैदा हो रही है। बचाव की दृष्टि से हर व्यक्ति को चाहिए कि वह घर का बना खाना ही लें तथा उचित व्यायाम एवं बर्जिस को भी महत्व दें। नशे से दूर रहें, योग एव प्राणायाम को भी जीवन में महत्व दें। उक्त बातें डॉ. अजय मित्तल (एम.डी.) ने अपने नर्सिंग होम सर्मेश हॉस्पीटल पर बतायीं।

जानिए विटामिन-सी और ग्लूटेथियॉन के बारे में

विटामिन सी मस्तिष्क और स्नायुओं के ऊतक तथा इनके चारों ओर मौजूद द्रव्य के आस-पास एकत्रित हो सकता है। यह रक्त मस्तिष्क अवरोध को पार करने में सक्षम होता है और दरअसल इस ऊतक में विटामिन सी की मात्रा प्लाज़्मा की अपेक्षा 10 गुना अधिक होती है। जब यह समझ लेंगे कि विटामिन-सी न सिर्फ एक बेहतर एंटीऑक्सीडेंट है, बल्कि इसमें विटामिन ई और ग्लूटेथियॉन के पुनर्निर्माण की क्षमता भी होती है, तो यह मस्तिष्क तथा स्नायु कोशिकाओं की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व बन जाता है। डॉ. एम.सी. मॉरिस द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि 65 साल से अधिक उम्र के लोगों को अतिरिक्त पोषक तत्वों के रूप में विटामिन-सी और विटामिन-ई देने से उनमें अल्ज़ाइमर्स डिमेंशिया होने की आशंका कम हो जाती है।

ग्लूटेथियॉन मस्तिष्क और स्नायु कोशिकाओं में पाया जाने वाला बहुत महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट है। लेकिन पोषक तत्व के रूप में लिए जाने पर इसका अवशोषण मुश्किल होता है। रक्त मस्तिष्क अवरोध पार करने की इसकी क्षमता भी अभी तक स्पष्ट नहीं है। कुछ अध्ययनों में ग्लूटेथियॉन के इंजेक्शन दिए जाने पर पार्किंसंस बीमारी के मरीज़ों में उल्लेखनीय सुधार आया। हालाँकि इन अध्ययनों में केवल कुछ मरीजों को ही शामिल किया गया था।

इस समय सबसे बेहतर रणनीति यह है कि हम शरीर को ऐसे पोषक तत्वों की पूर्ति करें, जिससे वह खुद का ग्लूटेथियॉन (एन-एसिटाइल-एल-सिस्टीन, नियासीन, सेलेनियम और विटामिन बी-2) बना सके। इसके साथ ही आपको ऐसे एंटीऑक्सीडेंट पोषकों को भी लेने की आवश्यकता है, जो ग्लूटेथियॉन का पुनर्निर्माण करते हों, ताकि इसका बार-बार उपयोग किया जा सके।

पदार्थ का विनाश

ईश्वरवादी कहेगा कि भगवान किसे पसन्द नहीं करता तो उसका नाश करता है अथवा समाप्त कर देता है। परन्तु इस सृष्टि में किसी प्रकार पदार्थ का नाश नहीं होता। उसका रूप बदल जाता है। जब हम सूखी लकड़ियों के ढेर में आग लगाते हैं तो लकड़ियाँ जलकर राख हो जाती हैं। मोटे तौर से देखने पर यह लगता है उन लकड़ियों का नाश हो गया और थोड़ी सी राख बची है। परन्तु वैज्ञानिक जानता है कि लकड़ियों का नाश नहीं हुआ केवल उनका रूप बदल गया। जितन वजन उन लकड़ियों में पहले या जलने के बाद उनका वजन और भी बढ़ गया है। आँखों से केवल हम राख को देखते हैं। इसीलिए जलने के बाद लकड़ियों का वजन घटा दिखाई देता है। जब लकड़ी जलती है तो वायुमण्डल में आक्सीजन लेकर, लकड़ी के तत्व कार्बन डाई–आक्साइड आदि तत्वों में बदलकर अदृश्य गैस के रूप में वायुमण्डल में खो जाते हैं। आँखों को केवल राख दिखाई देती है लकड़ियों के जलते समय, जितनी गैस बनती है अगर सबको एकत्रित कर लिया जाये तो लकड़ियों का वजन इसलिये बढ़ जायेगा क्योंकि लकड़ियों के तत्वों में आक्सीजन तत्व और आकर मिल गया है। इस पूरी सृष्टि में कोई पदार्थ नष्ट नहीं होता और न कोई शून्य में से नया पदार्थ बनता है। जितना पदार्थ सृष्टि में है वही पदार्थ अलग–अलग परिस्थितियों में अपना रूप बदलता रहता है। यदि कोई कहे कि शून्य में से भगवान से सृष्टि की रचना की तो यह झूठ होगा क्योंकि शून्य से पदार्थ जन्म नहीं लेता। कोई भी पदार्थ किसी दूसरे पदार्थ का रूप बदलने से जन्म लेता है। इसी प्रकार यदि कोई कहे कि भगवान प्रलय करेगा और सब कुछ नष्ट हो जायेगा तो यह भी झूठ है क्योंकि पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता उसका रूप बदल जाता है। पदार्थ के लाखों रूप ऐसे हैं जिन्हें मनुष्य की जानेन्द्रियां अनुभव नहीं कर सकती। एक ब्रह्म द्वितीय नास्तिका सिद्धान्त, एक झूँठी कल्पना है। एको पदार्थ द्वितीय नास्ति सच है।

ईश्वर की खोज
चौ0 महाराज सिंह भारती, पू. सासंद
पृ० सं० 27 से 28

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

किस्सा फर्रुखाबाद की संतोषी माता का

संतोषी माता के नाम पर धन कमाने का एक धार्मिक तमाशा

फर्रुखाबाद जिला, उत्तर प्रदेश का एक पिछड़ा और आलू उत्पादक जिला है। यह दिल्ली से लगभग 250 किलोमीटर दूर है। यहां से लगभग 15 किमी. दूर फतहगढ़ नामक कसबा आता है। छिबरामऊ से बस बदल कर 15 किमी दूर सौरिख नामक कसबा आता है। यहां से नहर, जो गंगानहर कहलाती है, के किनारे लगभग 15 किमी दूर मलिकपुर नामक लोधे राजपूतों का छोटा सा गांव है, यहीं पर एक संतोषी माता प्रकट हुई थी।

इस गांव में दयाराम गुप्ता की पुत्री संतोषी को साक्षात संतोषी माता का अवतार मान कर दूरदूर से हजारों भक्त, बाल, वृद्ध, युवा और प्रौढ़ यहां दर्शनार्थ आते थे, अपनी मनौतियां मनाते और मनोवांछित फल पाकर चले जाते।

फलां व्यक्ति, जो फलां गांव का रहने वाला था, की आंखें माता की कृपा से ठीक हो गईं। अमुक बांझ स्त्री के चांद सा पुत्र उत्पन्न हुआ। अमुक मुकदमें में जीता, अमुक प्रथम श्रेणी में पास हुआ। अमुक की नौकरी लगी, तो अमुक को मनोवांछित पति (या पत्नी) मिला। ऐसी ही अन्य अनेक बातें कही जाती थीं।

यदि 'संतोषी' में अलौकिक शक्ति नहीं थी, तो 6 वर्षों तक एक ही आसन पर, एक ही मुद्रा में, बिना भोजन, पानी का इस्तेमाल किए जीवित कैसे रही? वह कौन सी शक्ति थी जो उसे जीवित रखे थी? लोगों की मनोकामनाओं की पूर्ति क्यों हो रही थी?

फर्रुखाबाद की यह 'संतोषी माता' एक दिलचस्प प्रसंग तो है ही, उस का एक पक्ष बड़ा ही कारुणिक भी है, संभवतः यह पहली बार हुआ था जब कि किसी स्त्री ने स्वयं ही यह घोषणा की हो कि वह एक खास देवी का अवतार है, अन्यथा अब तक प्रायः भक्त ही किसी को 'भगवान' मानते रहे हैं।

हमारे पास भगवानों की जो सूची है, उसमें 200 स्वयंभू भगवानों के नाम हैं, संतोषी माता ने इस सूची से बाहर कदम रख दिया है।

कौन है यह संतोषी माता?

इस प्रतिनिधि ने अब तक जितने भी प्रामाणिक समझे जाने वाले धार्मिक ग्रंथ पढ़े हैं, उनमें से किसी में भी संतोषी माता का जिक्र नहीं है, वैसे यह वैष्णों देवी से पुरानी देवी है। सन् 1970 के बाद वैष्णों देवी का प्रचार पंजाबियों ने किया और दंतकथाओं के आधार पर उसे दुर्गा के 51 रूपों में से एक सिद्ध किया। 10 वर्ष पूर्व 'जय संतोषी माता' फिल्म ने संतोषी माता को उत्तर भारत के घर घर में पहुंचा दिया और फिल्म एवं माता दोनों ही सुपर हिट हो गई।

फिल्म में संतोषी माता को गणेश की पुत्री बता बता कर पूरी तरह काल्पनिक कहानी गढ़ी गई हो सकता है, किसी पंडित की पोथीपत्री में संतोषी माता का इन्हीं 51 रूपों में से किसी एक रूप में जिक्र हो। बहरहाल संतोषी माता शेर वगैरह की सवारी नहीं करती और आलथीपालथी लगा कर बैठी हुई शांत देवी है, जो भक्तों पर कष्ट वगैरह आने पर ही तलवार उठाती ह।

फर्रुखाबाद की संतोषी माता भी आलथीपालथी लगा कर बैठी थी।

संतोषी माता पूरी तरह से एक अंधविश्वास है। यह अंधविश्वास अवतारवाद और मूर्तिपूजा के पाखंड के कारण फलीभूत हुआ है। संतोषी माता नाम की कोई देवी न कभी हुई थी, न होगी। धर्म के धंधेबाजों ने जनता के अंधविश्वास को भुनाने के लिए जितने षड्यंत्र रचे हैं, संतोषी माता भी उन में से एक हैं। भारत के 33 करोड़ देवी देवताओं की तरह संतोषी माता भी न तो किसी का भला कर सकती है, न बुरा।

मनगढ़ंत किस्सा

फर्रुखाबाद की संतोषी माता भी एक बहुत बड़ा पाखंड है। यद्यपि अभी तक इस देवी का अखिल भारतीय स्तर पर प्रचार नहीं हुआ था, तथापि इसके मंदिर में इस प्रतिनिधि ने खासी भीड़ देखी। चढ़ावा तो खैर चढ़ना ही था। एक गांववासी के अनुसार लगभग 6 लाख रुपया 5 वर्षों में यहां चढ़ चुका था।

फर्रुखाबाद की इस जीतीजागती मगर बोलने न वाली देवी के बारे में इस प्रतिनिधि ने जो छानबीन की, उस की रिपोर्ट यहां प्रस्तुत है।

17 मई को प्रतिनिधि देवी स्थल पर पहुंचा। 16 मई को वह लखनऊ जोधपुर एक्सप्रेस से फर्रुखाबाद पहुंचा था। दिलचस्प बात यह है कि फर्रुखाबाद के लोगही यह नहीं जानते थे कि उनके यहां किसी देवी का अवतार हुआ है 27 अप्रैल, 1986 के 'पायोनियर' अंग्रेजी दैनिक में प्रकाशित किन्हीं माथुर साहब की रिपोर्ट के आधार पर यह प्रतिनिधि फर्रुखाबाद पहुंचा था।

फर्रुखाबाद रेलवे स्टेशन के तत्कालीन सहायक उप स्टेशन मास्टर सिद्धेश्वर ने संतोषी माता के बारे में अनभिज्ञता प्रकट की। फर्रुखाबाद से फतेहपुर जाते समय रेलगाड़ी में दरजनों व्यक्तियों से पूछताछ की, सभी ने देवी के प्रकट होने के बारे में अनभिज्ञता प्रकट की।

फतहगढ़ में पायोनियर के तत्कालीन संवाददाता माथुर साहब को ढूंढ़ा, माथुर साहब बुजुर्ग आदमी हैं, किंतु देवी मे उन की पूरी आस्था है, उन्होंने फरमाया, ''संतोषी वास्तव में देवी है और अवतार है। उसमें अलौकिक शक्ति है।

फतहगढ़ स्थित पुलिस मुख्यालय में इस प्रतिनिधि ने तत्कालीन पुलिस अधीक्षक इंद्रसिंह मेहरा से भेंट की। उन्होंने देवी के बारे में अंधभक्ति तो प्रकट नहीं की, किंतु भोजन और जल का सेवन न करने के बावजूद देवी के जीवित रहने पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए उसे किसी 'अलौकिक शक्ति से संपन्न' जरूर माना।

उन्होंने कहा, ''आप उसकी मेडिकल जांच कराएं''।

इंद्रसिंह ने ही इस प्रतिनिधि को मलिकपुर पहुंचाने की भी व्यवस्था कराई। माथुर साहब को भी वहां ले गए थे।

17 मई को यह प्रतिनिधि, फतहगढ़ आर्य समाज के प्रधान श्री गुरुदत्त शर्मा और छायाकार ओमसिंह बसो में क्रमशः छिबरामऊ और वहां से सौरिख पहुंचे। सौरिख थाना के थानाध्यक्ष चंद्रप्रकाश सिंह और एक सब इंस्पेक्टर इस्माइल खान सहित मोटर साइकिलों पर हमारा काफिला संतोषी माता के दर्शन करने चल पड़ा।

खिरनी नामक स्थान से बाईं ओर मुड़ने पर गंगा नहर मिलती है। इसकी दो शाखाएं हैं। एक कानपुर शाखा और दूसरी इलाहाबाद शाखा। कानपुर शाखा सीधी चली जाती है। इलाहाबाद शाखा दाहिनी ओर मुढ़ जाती है। नहर के किनारे किनारे रेतीले और गड्ढों भरी पगडंडियों पर चल कर हम लगभग दो घंटे में मलिकपुर पहुंचे।

मलिकपुर एक वीरान, पिछड़ा, अशिक्षित और निहायत गरीब गांव है, यहां 150 घरों की आबादी थी और 99 प्रतिशत मकान कच्चे थे। गांव में केवल एक घर ब्राह्मण का था और एक ही घर बनिए का।

इसी दयाराम गुप्ता नामक बनिए के घर इस तथाकथित संतोषी माता का अवतार हुआ था।

देवी स्थल गांव के बाईं ओर था, बीच में नहर है देवी स्थल उन दिनों दयाराम के भाई की जमीन पर था, जहां पहले खेत था। दयाराम लगभग 50 वर्ष की उम्र का एक प्रौढ, सुस्त और सीधासादा आदमी था। देवी, चमत्कार, पाखंड और ढोंग की इस दुकानदारी की मुख्य निर्देशिका थी। दयाराम गुप्ता की पत्नी शांतिदेवी और सूत्रधार थे 25-26 वर्षीय बाबा रमेश सरताज।

हमारे पहुंचने के समय मंदिर में कोई विशेष भीड़ नहीं थी। मंदिर के नाम पर लगभग ढाई सौ वर्गगज में 3 बड़े-बड़े झोंपड़े बने थे एक झोपड़े, जिस में किवाड़ भी थे और परदा भी, के भीतर 5x5 का सिर्फ डेढ़ फुट ऊंचा पक्का चबूतरा बना था। चबूतरे पर दरी, दरी पर गद्दा, गददे पर चादर और चादर पर महान अवतार संतोषी माता विराज रही थीं।

दूसरा झोंपड़ा अतिथि भवन के रूप में इस्तेमाल होता था। अकसर महत्वपूर्ण व्यक्तियों (वी.आई.पी.) को यहां ठहरा दिया जाता था, वैसे रात में यहां देवी के माता पिता रहते थे। देवी के माता पिता ने बाकायदा पुरोहितों जैसे गेरुए वस्त्र धारण कर लिए थे। यहीं वह युवा बाबा रमेश सरताज भी रहता था।

तीसरा झोंपड़ा 'यज्ञ स्थल' था यह झोंपड़ा सब से बड़ा था और चारों तरफ से खुला था यहां 3 बार यज्ञ हो चुका था उस समय यह भक्त लोगों को धूप, वर्षा से बचाने के काम आता था।

दयाराम गुप्ता, जो 10 संतानों का पिता था, लगभग 60-65 बीघे खेतों का मालिक था। उसकी एक संतान मर चुकी थी उस समय उसके 3 लड़के और 6 लड़कियां थी। संतोषी माता उसकी तीसरी संतान थी संतोषी माता की उम्र 23 वर्ष थी बड़े लड़के भगवानदास की लगभग 30 वर्ष थी उसके 3 बच्चे थे पहले वह गांव में फेरी लगा कर कपड़े बेचा करता था फिर देवी की 'सेवा' करने लगा।

मोटर साइकिलों की आवाज के साथ हमारे काफिले के वहां पहुंचते ही देवी स्थल पर हड़कंप मच गया। आज तक गांवों में पटवारी के बाद थानेदार को ही सब से बड़ा अफसर माना जाता है। यह गांव सब इंस्पेक्टर इस्माइल खान के इलाके में आता था फिर बड़ा दरोगा भी साथ था। दयाराम गुप्ता का पूरा परिवार थानेदार साहब और हमारी आवभगत में जुट गया। निर्देशिका शांतिदेवी (45 वर्ष) ने इस प्रतिनिधि को अपने 'कब्जे' में कर लिया।

शांतिदेवी ने 'देवी' के बारे में अपनी रामकहानी इस प्रतिनिधि को अपनी फर्रुखाबादी शैली में इस प्रकार सुनाईः

''संतोष कुमारी (संतोषी माता के बचपन का नाम, हालांकि गांव का कहना है कि उसका बचपन का नाम सुंदरी देवी था) का जन्म सन 1963 में चैत्र के शुक्ल पक्ष की सप्तमी शुक्रवार को हुआ। इन्हीं दिनों लोग नवदुर्गा का व्रत रखते हैं।

''जिस समय यह मेरे पेट में थी, मुझे स्वप्न में संतोषी माता ने दर्शन दिए और कहा कि प्राणियों का उद्धार करने के लिए मैं धरती पर तेरी पुत्री के रूप में जन्म लूंगी तू ने पिछले जन्म में गौ, ब्राह्मणों और अपने पति की एकनिष्ठ सेवा की थी। तेरे पुण्य के प्रताप से ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों प्रसन्न हुए हैं। मैं ने ब्रह्मा से बातें की हैं। ब्रह्मा ने मुझे से कहा था कि पृथ्वी पर संतोषी माता के भक्तों पर बड़ा दुख और अत्याचार हो रहा है उनके दुखों को दूर करने के लिए मैं तेरे गर्भ से जन्म लूंगी।

''इस पर मैंने हाथ जोड़ कर कहा कि हे माता! आप तो तेजवान तेजस्वी माता हैं, मैं आपका तेज कैसे सह पाऊंगी तब उन्होंने कहा कि तुझे प्रसव वेदना बिलकुल नहीं होगी। वही हुआ संतोषी के जन्म के समय मुझे प्रसव वेदना नहीं हुई।

''संतोषी बचपन से ही मुझे दासी कहती थी और अपने पिता को सेवक होने वाली घटनाओं को वह पहले ही बता देती थी लोगों की खोई वस्तुएं बता देती थी इसके अलावा वह अपना ज्यादा समय ध्यान और समाधि में लगाती थीं, मैंने स्वप्न की बातें मिथ्या समझी थी। मैं स्वयं संतोषी माता का व्रत रखती थी जब यह 9 वर्ष की थी तो मैंने एक रात अजीब दृश्य देखा।

''मैंने देखा संतोषी घर में नहीं है। ढूंढ़ा तो पाया कि वह घर से बाहर तुलसी चौरे पर बैठी है और ध्यान में लीन है। 9 वर्ष की बालिका को इस रूप में देखकर मेरा हृदय धकधक करने लगा।

''मैने 'बिटिया-बिटिया' कह कर उसे जगाना चाहा, तो उसने आंखे खोलकर क्रोध से मेरी तरफ देखा और बोली, ''मैंने तुम्हें कितनी बार मना किया है कि साधना में भंग मत डाला करो। मैं तुम्हारी बेटी नहीं हूं। हम 7 बहनें और एक भाई है। आज से साढ़े 5 हजार वर्ष पूर्व मेरा जन्म हुआ था, यह मेरा दूसरा जन्म है इस जन्म में भी मेरा एक भाई है, जिसका जन्म हो चुका है, नेमादेवी भी मेरी बहन थी। मैं विष्णु भगवान से बातें कर रही थी। तुमने टोक दिया।

''बस, बेटी की यह बात सुनी, तो उसी दिन मुझे मारे भय के बुखार आ गया।''

पाठकों को विदित हो कि जिला मैनपुरी (जो फर्रुखाबाद से विशेष दूर नहीं है) के एक गांव फादिलपुर में भी कुछ वर्ष पूर्व एक देवी प्रकट हुई थी और लगभग 11 वर्ष तक बिना अन्नजल के तपस्या करने वाली देवी के रूप में नाटकीय प्रतिष्ठा प्राप्त उक्त देवी का पटाक्षेप हुआ, इसी 'नेमा देवी' का जिक्र ऊपर आया है।

शांतिदेवी ने आगे बताया

''फफूंद थाने के खानपुर नरेश के यहां शादी के 20 साल बाद देवी की कृपा से लड़का हुआ उन्होंने खुश होकर यहां भागवत कथा कराई। इटावा के एक थाना बेला के गांव धरभंगतपुर का एक व्यक्ति, जो पूरी तरह

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

अंधा था, उसकी आंखें देवी की कृपा से ठीक हुई थी।''

शांतिदेवी ने इस तरह की अंधविश्वास फैलाने वाली और भी ढेरों मनगढ़ंत कहानियां इस प्रतिनिधि को सुनाईं।

जहां तक संतोषी माता का प्रश्न है, वह बात तो किसी से करती नहीं थी। बिना हिलेडुले पद्मासन लगाए बैठी थी। उसे गेरुए वस्त्र पहनाए गए थे। देवी की आंखे बंद थी।

बढ़िया चायनाश्ते के दौरान (इस प्रतिनिधि के सामने) देवी के पिता ने भी वही बातें दोहराई जो उनकी पत्नी ने कही थीं, किंतु कई स्थानों पर वह गड़बड़ा गए और झूठ पकड़ा भी गया। मगर 'इस' और 'उस' झूठ की बाल की खाल निकालने से भी यहां क्या फायदा है? जबकि सारा का सारा नाटक ही झूठ पर खड़ा किया गया था।

इस प्रतिनिधि ने जब शांतिदेवी की आंखों में झांक कर यह पूछा कि क्या 'संतोषी माता' ने वास्तव में गत 6 वर्षों से अन्न और जल त्याग रखा है? तो उस ने कुशल अभिनेत्री की तरह पलकें चुरा लीं और थोड़ा गड़बड़ा कर कहा, ''हां, लगभग 4 वर्षों से अन्नजल दोनों त्याग रखे हैं, पहले थोड़ा सा जल लेती थी। आप चाहें तो जांच कर सकते हैं।''

'अन्नजल' शब्द बड़ा मजेदार है भरपेट फल खाकर भी अन्नजल त्यागी बना जा सकता है यों भी यह बिलकुल झूठी बात है कि तथाकथित संतोषी माता ने अन्नजल त्याग रखा है। संसार का कोई भी व्यक्ति बिना अन्न या जल के नहीं रह सकता। जल तो उसे चाहिए ही, हमारे शरीर में 63 प्रतिशत जल होता है। जल की कमी होते ही शरीर की कोशिकाएं (सेल) कमजोर होने लगती हैं।

गांधीजी के बारे में सुना जाता है कि उन्होंने अब तक का सबसे लंबा 58 दिन का अनशन किया था, किंतु वह नीबू पानी लिया करते थे, काला पानी की सजा प्राप्त क्रांतिकारी जतीनदास ने जेल में अन्न और जल दोनों त्याग दिए थे। 29 दिन के बाद वह छटपटा कर मर गए। फिर वह विशुद्ध धार्मिक अपराध नहीं तो क्या है कि संतोषी माता ने 6 या 4 साल से अन्नजल त्याग रखा था।

इस प्रतिनिधि को इस झूठ की जांच करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी यह देवी स्थल पर लगभग 6 घंटे रहा–सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक मई की दोपहरी प्रतिनिधि देवी के सम्मुख फर्श पर बैठा उसकी मां शांतिदेवी की गप्पें सुन रहा था, किंतु निगाहें देवी पर थीं।

भक्तों, अपनी मां, अपने पिता, थानेदार साहब और एस.पी.साहब की दृष्टि में देवीजी समाधि में थी देवी पसीने में नहा रही थीं कारण? झोंपड़े में गरमी थी और पंखा नहीं था। हम सब भी पसीने में तरबतर थे और 6–6 गिलास पानी पी चुके थे।

यदि देवी जल ग्रहण नहीं करती, तो उसे पसीना कहां से आ रहा था? यह तो हमारे शरीर विज्ञान का मामूली सा तर्क है। खेद है, हमारे भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी (आई.ए.एस) और पुलिस अधीक्षक (एस.पी.) महोदय की समझ में भी यह मामूली सा तर्क नहीं आया।

जहां तक समाधि का प्रश्न है, देवी किसी समाधिवमाधि में नहीं थी, कारण?

यदि यह मान भी लिया जाए कि समाधि जैसी कोई चीज होती है, तो योग शास्त्र के अनुसार यह वह अवस्था है, जब व्यक्ति चेतनाशून्य हो जाता है, उसे कुछ ज्ञान नहीं रहता, देवी की आंखें बंद थीं किंतु भीतर पुतलियां घूम रही थीं, कारण, हमारी बातों को वह सुन रही थी और उस पर उनका प्रभाव भी पड़ रहा था।

आम तौर पर गहरी निद्रा में भी व्यक्ति की पुतलियां स्थिर हो जाती हैं फिर सीधे ब्रह्मा, विष्णु, महेश से बातें करने वाली पूर्ण समाधिस्थ और साक्षात संतोषी माता की अवतार देवी की पुतलियां कैसे घूम रही थीं?

इस प्रतिनिधि के इन दोनों तर्कों की प्रमाणिकता और सत्यता की जांच कोई भी कर सकता है। ये ऐसे प्रमाण है, जिन्हें वह देवी किसी भी तरह छिपा भी नहीं सकती थी फिर यदि यह प्रतिनिधि 'देवी कुछ खातीपीती है या नहीं' इसकी जांच करने के लिए 2–4 दिन पड़ा रहता, तो भी क्या होता।

2–4 दिन तक तो बिना खाएपिए यह प्रतिनिधि या कोई भी आम आदमी रह सकता है। हजारों हिंदू नवदुर्गा का व्रत रखते हैं और 9 दिन तक अन्न वगैरह नहीं खाते।

धन कमाने का धार्मिक तमाशा

तो क्या संतोषी माता के नाम पर धन कमाने का यह धार्मिक तमाशा था? हजारों वर्षों से लोगों की जिस अंधभक्ति धर्मभीरुता और परलोकापवाद को धर्म के धंधेबाजों ने खींचतान कर विषवृक्ष के रूप में विकसित किया है, उसके चलते यह कोई नई बात नहीं है।

कुछ वर्ष पूर्व 5–7 साल की लड़की को संतोषी माता बता कर ठगी करने वाले एक बाबा का भंडाफोड़ 'सरिता' द्वारा किया गया था क्या इस मामले में भी यह सब ढोंग धन कमाने के लिए किया जा रहा था?

इस प्रश्न के उत्तर में थोड़ा सा किंतु परंतु है कारण, इस प्रतिनिधि ने 8 घंटे के दौरान घंटों संतोषी माता, उसके पिता, संतोषी माता के ग्रामवासी, बाबा सरताज एवं संतोषी माता के भाई बहनों से मनोवैज्ञानिक पूछताछ की। प्रतिनिधि के साथ आए आर्य समाज फर्रुखाबाद (फतेहगढ़) के प्रधान गुरुदत्त शर्मा ने भी गहरी पूछताछ की हम ने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे बेहद चौंका देने वाले तो हैं ही, अत्यंत रहस्यमय भी हैं।

यदि हमारे तर्कों को गंभीर छानबीन की जाए और थोड़े से प्रमाण जुटाए जा सकें (जो अधिक परिश्रम का काम नहीं है, अलबत्ता समय लग सकता है) तो संतोषी माता मां को कानूनी रूप से दंडित किया जा सकता इसके साथ ही बाबा सरताज, पिता दयाराज गुप्ता एवं अन्य सहयोगी भी शायद ही बचते कारण यह है कि कथित 'संतोषी माता' मानसिक रूप से विक्षिप्त थी।

यातना देने का अपराध

एक अर्धविक्षिप्त लड़की को बिना खाना खिलाए (मतलब उसे खाना न देना) एक विशेष आसन या मुद्रा में घंटों बैठाए रखकर, उसकी माता अथवा परिवार के लोग धर्म के नाम पर बहुत बड़ा पाखंड और ठगी कर रहे थे।

मानसिक रूप से अपरिपक्व, विक्षिप्त अथवा अर्धविक्षिप्त लड़की को जबदस्ती एक विशेष मुद्रा में बैठने के लिए विवश करना यातना देने के अपराध में आता है अथवा नहीं, यह ऐसे मामलों में कानून की किस धारा के अंतर्गत कारवाई की जा सकती है, इस पर तो कोई कानूनादां ही प्रकाश डाल सकता है, किंतु इस प्रतिनिधि का तो इतना ही कहना है कि कथित संतोषी माता यदि पूर्ण नहीं, तो अर्धविक्षिप्त अवश्य थी।

इस प्रतिनिधि द्वारा पूछे गए सैकड़ों प्रश्नों के जाल में फंस कर उसकी मां शांतिदेवी ने स्वयं यह स्वीकार किया कि उनकी लड़की संतोष जब आरंभ में ऊलजलूल बकने लगी थी, तो उन्होंने अपनी बेटी को ओझातांत्रिकों को दिखावा था और बाद में आगरा के पागलखाने भी ले गए थे।

इस प्रतिनिधि के समक्ष, प्रश्नों के जाल में उलझ कर इस बात को कई बार स्वीकार किया कि उनकी लड़की को गांव वालों ने भी पागल करार दिया था, ये सब बातें आर्य समाज फतहगढ़ के प्रधान गुरुदत्त शर्मा के समक्ष हुई थी।

विक्षिप्तावस्था के क्या लक्षण होते हैं, तथा उनकी कितनी दशाएं होती हैं, इसे तो कोई पागलों का डाक्टर ही बताएगा, बहरहाल कथित संतोषी माता अपरिपक्व मस्तिष्क वाली, पूर्ण अथवा अर्द्धविक्षिप्त, जो किसी एक विशेष मुद्रा में या तो अपनी विशेष मानसिक स्थिति के कारण घंटों बैठी रह सकती थी या उसे बैठाया जाता था।

समय समय पर होने वाली 'जांचो' जिसे कोई भी 'भक्त' करना चाहता रहा होगा, के कारण संतोषी माता को भोजन नहीं दिया जाता, जिसके कारण वह सूख कर कांटा हो गई थी, निरंतर दुर्बल होती जा रही थी उसका चेहरा न केवल मुरझाया हुआ था, बल्कि पीला भी पड़ गया था।

यह भी हो सकता है कि वह अब ठीक हो, तो उसके मां बाप द्वारा यह एक तरह का गंभीर शोषण है किंतु संतोषी ठीक होगी, इसकी संभावना कम है, क्योंकि जब इस प्रतिनिधि ने संतोषी माता की माता से यह पूछा कि संतोषी माता को स्नान कौन कराता है तथा कपड़े कौन बदलता है तो जवाब में उसकी मां का कहना था कि जब 'देवी की इच्छा' होती है तो वह अपने बदन को 'हलका' कर देती हैं अर्थात उसके हाथ पांवों की अकड़ और ऐंठन ढीली हो जाती है।

वह स्वयं उसे स्नान कराती है और कपड़े बदलवाती है उन्होंने तो यहां तक कहा कि यदि प्रतिनिधि चाहे, तो उसके सामने ही वे उसके कपड़े उतार सकती है संतोषी माता न तो पेटीकोट पहनती थी, न ब्लाउज, केवल एक भगवा वस्त्र लपेटे रहती थी।

संतोषी माता की माता के इस बयान को यदि सत्य मान लिया जाए, तो क्या 23 वर्ष की एक जवान लड़की, जो पूरे होशोहवास में हो और विक्षिप्त अथवा मानसिक रोगी न हो, सैकड़ों पुरुषों के समक्ष नग्न हो सकती हैं?

जिस विश्वास से उसकी मां ने ये शब्द कहे, उससे तो ऐसा लगा था कि प्रतिनिधि के 'हां' कहते ही वह उसके कपड़े फौरन उतार देती।

इस प्रतिनिधि ने संतोषी माता के उभरे हुए तलवों का स्पर्श किया। वे गरम मालूम पड़े किसी भी अन्नजल त्याग ने वाले व्यक्ति के तलवे गरम नहीं होते। आहार की कमी से शरीर क्रमशः ठंडा पड़ता जाता है प्रतिनिधि ने अपनी उंगलियां संतोषी माता की नाभि के नीचे रखीं, उसकी सांस साधारण गति से उंगलियां संतोषी माता की नाभि के नीचे रखीं, उसकी सांस साधारण गति से तेज थी, जबकि भूखे व्यक्ति की श्वास गति कम होती जाती है।

अतः यह बिलकुल झूठ है कि संतोषी माता कुछ खातीपीती नहीं, यह अफवाह सुनिश्चित रूप से जानबूझ कर फैलाई गई थी, ताकि अंधभक्तों से धन बटोरा जा सके।

यद्यपि जिस दिन यह प्रतिनिधि गया था, देवी के सम्मुख चढ़ावे की रकम सौ रूपयों से भी कम थी, तथापि ग्रामवासियों का कहना था कि खूब चढ़ावा चढ़ता है, स्वयं बाबा सरताज ने इस प्रतिनिधित्व को अपना बयान बाकायदा लिख कर दिया था कि संतोषी भगवती का अवतार है और उस स्थल पर काफी चढ़ावा भेंट, घंटे, झंडे और जेवर चढ़ाए जाते हैं।

एक दिलचस्प घटना और घटी इस प्रतिनिधि ने जब मलिपुर गांव का दौरा किया, तो उसके साथ सौरिख के सब इंस्पेक्टर इस्माइल खान भी थे उनके कंधे पर स्टेनगन टंगी थी ऐसा उन्होंने हमारी सुरक्षा के लिए किया था कारण, यह क्षेत्र बुरी तरह अपराधग्रस्त है और गांव के लोगों की एक संख्या आपराधिक कार्यों में लिप्त है।

पुलिस को साथ देखकर अधिकांश पुरुष या तो बाहर चले गए या घरों में दुबक गए उन्होंने हमारी टीम को न जाने क्या समझा इसलिए इस प्रतिनिधि की गांव के अधिक पुरुषों से बातें नहीं हो पाईं, कुछ स्त्रियों और दयाराम गुप्ता के ही 'खास' आदमियों से ही बातें हो सकीं।

स्त्रियों ने एक स्वर में संतोषी को 'देवी' माना, बल्कि एक स्त्री ने तो यहां तक कहा कि यदि इस देवी की मान्यता हो जाए, तो कम से कम गांव तक पक्की सड़क बन जाएगी, पानी और बिजली का भी इंतजाम हो जाएगा। इस गांव में न तो पानी की समुचित व्यवस्था है, न बिजली की। शिक्षा के नाम पर 99 प्रतिशत व्यक्ति काला अक्षर भैंस बराबर है।

जाहिर है, ऐसे गांव में इस किस्म के अंधविश्वास पनपेंगे ही।

पूरा गांव लोधे राजपूतों का है, जो अनुसूचित जाति में आते हैं, इस प्रतिनिधि की मूंगलाल लोधे, सोनपाल लोधे, महावीर प्रसाद एवं ग्राम प्रधान पंचलाल लोधे से भी बातें हुईं सभी ने एक स्वर में संतोषी माता को चामत्कारिक देवी बताया किंतु वे बराबर बिजली, पानी और सड़क का आग्रह भी करते रहे, बाबा सरताज ने इस मुद्दे को लेकर गांव में नेतागीरी भी शुरू कर दी थी शिवचरण लाल शर्मा भी, जो गांव एक एकमात्र ब्राह्मण थे, अंधभक्त थे।

आंधी के आम और बाबा सरताज

कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि दयाराम गुप्ता और शांतिदेवी ने जानबूझ कर अपनी लड़की को 'संतोषी माता' बनाकर धर्म के नाम पर धंधा शुरू कर दिया, ऐसा नहीं लगता, वास्तविकता यह है कि उनकी लड़की संतोषी ने आरंभ ने ऊलजलूल हरकतें कीं, जिन्हें भोलेभाले अनपढ़ ग्रामीणों ने, जिन में दयाराम गुप्ता और शांतिदेवी भी शामिल हैं, ने अलौकिक माना।

हो सकता है कि कथित संतोषी की एकाध बातें संयोगवश ठीक निकल गई हों। विक्षिप्तावस्था में संतोषी गांव से बाहर निकल आई हो और एक जगह बैठ गई हो, उसने खाने पीने से इनकार कर दिया हो, और किसी ने उस पर 'देवी' की कृपा होने, या 'देवी' होने की ही बात कह दी हो। यह भी हो सकता है कि उसका जन्म शुक्रवार को ही हुआ हो, और संतोषी माता के अंधभक्त होने के कारण मां बाप ने विश्वास भी कर लिया हो, किंतु जब उस पर चढ़ावा चढ़ने लगा हो तो दयाराम गुप्ता की बनिया बुद्धि ने काम करना शुरू कर दिया हो।

बहराल 'संतोषी माता' का नाटक खूब चला, आंधी के आम बटोरने में किसी ने भी कोताही नहीं की। दयाराम गुप्ता के परिवार ने भी नहीं की। उन्होंने पूरे परिवार सहित मन, वचन, कर्म, वेशभूषा और लच्छेदार भाषा में 'संतोषी माता' की जयजयकार की और बाकायदा धंधेबाजी की। इस धंधे में इस परिवार के सभी लोग शामिल थे।

इस प्रकरण में 2 मुद्दे ऐसे हैं, जो बेहद रहस्यमय हैं और जिन पर से परदा उठना सरल नहीं लगता। प्रथम, संतोषी माता के ताऊ (शांतिदेवी के जेठ) गेंदालाल की रहस्यमय मृत्यु। शांतिदेवी के ही अनुसार–

''गेंदालाल अविवाहित थे और उन्होंने कोई संतान गोद भी नहीं ली थी। वह संतोषी को बेहद प्यार करते थे

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

जब भी संतोषी के विवाह की बात होती थी, संतोषी भड़क जाती थी।''

''एक दिन संतोषी ने अपने ताऊ को श्राप दिया कि यदि आप मेरे विवाह की बातें कीं, तो आप को भस्म कर दूंगी, एक दिन विवाद हुआ, देवी ने श्राप दिया और मेरे जेठ खाट पर गिर पड़े थे, उन्होंने पानी मांगा, मैं पानी देने गई, तब यह देखा।''

यह किस्सा भी तब से शुरू हुआ है जब से भगवानदास (संतोषी के बड़े भाई) की शादी हुई थी और उसकी सुंदर पत्नी राधा घर में आई। राधा ने इस प्रतिनिधि को बताया, ''सब से पहले मुझे 'देवी' आती थी, मेरे ससुर (गेंदालाल) 'देवी' पर विश्वास नहीं करते थे और सब को गालियां देते थे। ससुर मरे, तो ननद पर देवी आने लगी, फिर 'देवी' ने ही मुझे ठीक किया।''

'संतोषी माता' जिस जमीन पर मंदिर जमाए बैठी थीं, वह उन के ताऊ गेंदालाल की ही जमीन थी और उसपर चकबंदी इत्यादि का चक्कर भी चल रहा था क्या इस मुद्दे में कुछ रहस्य है?

बाबा कम चालू चीज ज्यादा

दूसरा मुद्दा है, बाबा सरताज का इस बाबा की उम्र लगभग 24 वर्ष होगी। यह बाबा कम, चंडूल छोकरा ज्यादा लगता था। इसका वास्तविक नाम रमेशचंद्र था। यह पास के ही एक अन्य गांव रसूलपुर (छिबरामऊ) का रहने वाला था और जाति का काछी था। यह कविता लिख लेता था और छिबरामऊ के बिहारीलाल वैश्य इंटर कालिज से 11वीं फेल था।

इसके पिता का नाम लालाराम है जो रसूलपुर में रहते थे। इस धंधेबाजी को प्रचारितप्रसारित और उसे शक्तिसंपन्न बनाने में इसका हाथ था, इसने बाल बढ़ा कर गेरुए वस्त्र धारण कर लिए और यह चौबीसों घंटे वहीं रहता था।

इन महाशय के बारे में प्रचारित किया गया था कि ये 'देवी' के 7 जन्मों के भाई हैं इस प्रतिनिधि को उसने खुद बताया, ''मेरी, 'देवी' से बातें हुईं, तो उन्होंने ही मुझे बताया कि मैं उनका 7 जन्मों का भाई हूं, साढ़े 5 हजार वर्ष पूर्व मेरा प्रथम जन्म हुआ था यह दूसरा है।''

''देवी से मुलाकात कब हुई?'' इसके जवाब में इन भाई साहब ने फरमाया कि इन्हें भी स्वप्न हुआ देवी ने ही आदेश देकर उन्हें अपने स्थान पर बुलाया और तब से घर त्याग कर देवी की सेवा में ही जमे रहे, पूरा जीवन इसी में गुजार देंगे।

''क्या देवी कुछ खातीपीती नहीं?'' इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि खाना तो उन्होंने त्याग रखा है बाबा का कहना है कि 6 वर्षों से वह सिर्फ आलू खा कर ही जिंदा है अपनी बातचीत, लटके झटके और तौरतरीके से यह आमदी बाबा कम चालू चीज ज्यादा नजर आता है।

इस खलीफा बाबा ने 2–3 किताबें भी छपवाई जो 'देवी' के ऊपर लिखी थीं, इन्हें इसने खुद ही छपवाया था और खुद ही बेचता था एक किताब का शीर्षक है– 'सरताज सुमन' इसमें लांगुरिया, बाहर और फिल्मी तर्जों पर संतोषी फर्रुखाबाद वाली की स्तुति में भजन और कीर्तन था एक फिल्मी गीत, 'गम दिए मुस्तकिल' की तर्ज पर सरताज की बानगी पर गौर फरमाइए –

''देखो जा कर ललन, बैठी तपती निजन,
मां संतोषी, तार देती मां सभी दुष्ट, दोषी
ग्राम मलिकपुर जनम ले कर के भाई,
कष्ट दुनिया का हरने को आई,
मां जाके घरन, कष्ट लागी हरन, करि कसौटी,
तार देती मां सभी दुष्ट, दोषी''

एक अन्य फिल्मी गीत ''करती हूं तुम्हारा व्रत मैं'' (फिल्म 'जय संतोषी मां') की धुन पर बाबा सरताज शैली कीर्तन देखिए –

''भजता हूं तुम्हें नित मैं, स्वीकार करो मां,
भव जाल में हूं भटका, बेड़ा पार करो मां.....,
इस माया मोह के परदा को मेरे दिल से हटा दो
हे मां संतोषी मेरी बिगड़ी को बना दो
इस जीवन से सरताज का भी उद्धार करो, मां...''

इस प्रतिनिधि को बाबा ने यह पुस्तक भेंट की इस की कीमत 1.25 है और इसके 1,000–1,000 प्रतियों के दो संस्करण छप चुके थे पुस्तक पर मोटे मोटे अक्षरों में लिखा है – ''सर्वाधिक लेखक का है।

दूसरी पुस्तक हनुमान चालीसा शैली में 'संतोषी माता फर्रुखाबादी चालीसा' है इसका भी सर्वाधिकार लेखक के पास है और कीमत, सिर्फ 50 पैसे मंदिर पर चैत व क्वार की नवदुर्गा व दशमी को तथा आषाढ़ एवं अगहन में भारी मेला लग जाता है, तब इन पुस्तकों की अंधाधुंध बिक्री होती है है न बाबा गुरु घंटाल।

चालीसा की कुछ पंक्तियां देखिए –

जय जय मातु मलिकपुर वाली,
अभयशक्ति दे करो खुशाली
सरताज की तुम प्रिय बहन कहाती,
सब जग जननी कहलाती
कहां तक करूं भाग्य सराहना,
बनी जगत तजि रमेश की बहना
पितु दयाराम की सुता कहाई,
लाडिली मां शांति की जाई
बस धार्मिक यहीं रमेशचंद्र भ्राता,
वैसे तीन और हैं भ्राता

और अंत में ''लाल देह लालि लसै...की शैली में –

''शुक्रवार इन नाम से धारे जो उपवास
हरण होय संकट सभी, सफल होय अभिलाष
यह चालीसा नेम से पाठ करे नर जोय
'सरताज' कहे तिहि दाहिनी, मां संतोषी होय
प्रेम से बोलो संतोषी देवी की जय...''

इस बाबा के बारे में कुछ अजीबोगरीब बातें सुनने को मिलीं जैसे, यह बाबा मलिकपुर एवं आसपास के गांवों में पुलिस की मुखबिरी भी करता था स्वयं इस प्रतिनिधि की मुलाकात बाबा से सौरिख पुलिस थाने पर हुई थाने पर वह जिस ढंग से बैठा था और पुलिस से बातें कर रहा था, उसके पुलिस से गहरे संबंध स्पष्ट दिखाई देते थे।

सुना है कि मलिकपुर एवं आसपास के गांवों के कुछ अपराधियों ने उस की इसी कारण कई बार पिटाई भी की बाबा जब तब पुलिस से संरक्षण पाता रहता था देवी स्थल पर सौरिख पुलिस का पूरा संरक्षण रहा है और ये लोग थाने से घनिष्ठ संपर्क बनाए हुए थे।

जिस समय यह प्रतिनिधि देवी स्थल पर शांतिदेवी से बातें कर रहा था, शांतिदेवी ने प्रतिनिधि को एक रजिस्टर दिखाया, शांतिदेवी का कहना था कि आज से 4 वर्ष पूर्व, जब देवी ने समाधि नहीं ली थी वह भक्तों एवं आगंतुकों के प्रश्नों के जवाब स्वयं लिखकर देती थी सुबूत के रूप में उसने कुछ कागज दिखाए ये कागज सरताज के हाथों से लिखे हुए थे।

स्पष्टतः शांतिदेवी ने झूठ बोला कारण, वह लेख कक्षा 5 तक पढ़ी, संतोषी के हाथ के हो ही नहीं सकते फिर, थाने में आकर जब बाबा ने अपने हाथ से लिखकर इस प्रतिनिधि को संतोषी माता का जीवन परिचय दिया, तो दोनो की लिखावट मिल गई इससे भी यह स्पष्ट है कि ''देवी भक्तों को लिखकर जवाब देती है'' का पाखंड रच कर न जाने कितने लोगों को मूर्ख बनाया गया।

इस रजिस्टर में प्रतिनिधि ने कई ऐसे कागज देखे जो गांव की जमीनजायदाद एवं अन्य मुकदमों के थे यह सब बाबा के हाथ के लिखे हुए थे मलिकपुर तक सड़क बनाने का प्रार्थनापत्र, जो जिलाधिकारी को लिखा था, भी वहां रखा था इससे भी यह स्पष्ट हो जाता है कि यह गुरु घंटाल बाबा गांव में नेतागिरी भी करता था।

इस प्रतिनिध को बाबा सरताज ने जो कागज लिखकर दिया था, उसके अनुसार 'संतोषी' भगवती का अवतार है जबकि शांतिदेवी उसे 'संतोषी मां' का अवतार मानती हैं यह सब गड़बड़ इसलिए हो रही थी कि धर्म की इस दुकानदारी को आगे बढ़ाने के लिए कोई ज्यादा तेज खोपड़ी अभी वहां नहीं पहुंची थी।

बाबा सरताज की मूर्खता को इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि उसने इस प्रतिनिधि को हाथ से लिखकर दिया था...'उस (संतोषी) ने पिताजी को भी पागल कर दिया और तारुजी को ज्यादा वाद विवाद करने पर इन्हें गुस्सा आ गया, तो इन्होंने जरा सी देर में उन्हें खत्म भी कर दिया,'' गेंदालाल की रहस्यमय मृत्यु बाबा के लिखित बयान से क्या और भी नहीं उलझ जाती?

एक पत्र इस प्रतिनिधि को मिला, जो स्वयं शांतिदेवी ने दिया इसमें बाबा ने संतोषी से कुछ प्रश्न पूछे संतोषी ने जवाब दिए ये अजीबोगरीब सवाल बड़े दिलचस्प हैं जो आगे दिए गए हैं।

उन दिनों बेहद चर्चित और प्रचारित इस संतोषी माता प्रकरण को इस प्रतिनिधि ने अपने एक दिन के दौरे में जैसा देखा, और समझा था, वह स्पष्टतः ढोंग, पाखंड नजर आता था धर्म के धंधेबाज हर बार कुछ नया ही नाटक करते हैं और जनता को ठगते है।

क्या तमाशा है कि देश 21वीं सदी में चल रहा है, देश कंप्यूटर युग में प्रवेश कर चुका है और इधर इस किस्म के ढोंग और अंधविश्वास पनप रहे हैं।

अभी तक धर्म के धंधेबाजों ने या तो स्वयं को 'भगवान' कहा है, अथवा भक्तों ने उसे भगवान कहा है यह पहला मौका है, जब किसी स्त्री को स्वयं घोषणा करनी पड़ी है कि वह 'संतोषी माता' है।

वास्तव में यह घोषणा भी बाबा सरताज के हाथों से लिखी गई है, जो इस प्रतिनिधि के पास 'जवाब सवाल' नामक लेख के रूप में सुरक्षित है।

संतोषी की मां एवं पिता भी अशिक्षित थे उन्होंने यद्यपि अपनी दृष्टि और योग्यता के अनुसार ढोंग और पाखंड फैलाने का पूरा प्रयास किया पर उनका झूठ जब तब पकड़ में आता ही रहा कारण, अभी तक वे कोई एक कहानी नहीं गढ़ पाए थे वे कभी कुछ कह जाते थे, कभी कुछ।

सरताज का षड्यंत्र

'प्रश्नोत्तरी' (सवालजवाब) शीर्षक लेख, जो इस प्रतिनिधि को मिला था, में लिखी बातें विचित्र हैं, और समझ में नहीं आती बाबा सरताज ने स्वयं ही प्रश्न किए हैं और स्वयं ही उत्तर भी लिखे हैं जो कहीं कहीं तो बेहद ऊलजलूल हैं, कहीं रहस्यमय हैं और कहीं कहीं द्विअर्थक भी, हिंदी फिल्मों के संवाद लेखक कादर खान के संवादों की तरह

कुछ बानगियां देखिए :

संतोषी : प्रिय भाईजी, मैं आप से 3 वचन, अर्थात वरदान चाहती हूं।

सरताज : परम पूजनीय बहनजी, बगैर सोचे समझे मैं आप से केवल कहता नहीं हूं, बल्कि आग्रह करता हूं कि आप 3 के स्थान पर 4 मांग लो, क्योंकि मेरे पास तो मेरा कुछ नहीं है, जो कुछ है आप का है बहन जी, ये आप क्यों लिखती हैं कि 3 वरदान मांगती हूं, मैं तो सदैव तैयार हूं।

संतोषी : चिंता मत कीजिए, वह कोई वस्तु नहीं, वास्तविक वरदान है।

सरताज : मैं पहले ही सब समझ चुका हूं, आप मांगने में देर न करें, सब 'एवमस्तु' है मैं तो अनुचर हूं और आप तो हमारी सर्वमयी 'सिस्टर' हैं।

संतोषी : (1) आप रामपुर तजने की आवश्यकता कीजिए (2) आप इस 'कमीनी' की दिशा की तरफ मुख न करें (3) प्रिय भाईजी, आप हमारे अलावा किसी भी कमीनी के लिए 'सिस्टर' शब्द का प्रयोग न करें।

सरताज : स्वप्न में भी नहीं, कदापि नहीं (3 बार)

संतोषी : जहां हमारा पसीना गिरेगा, वहां आप क्या करेंगे?

सरताज : जहां आप का पसीना गिरेगा वहां हम खून बहा देंगे।

संतोषी : मैं ने न मानने के वास्ते न लिखा एक वचन दे दें।

सरताज : जिद मजबूत दिलदार का होता है मैं अपना जीवनजान आपके चरणों में छोड़ रहा हूं।

संतोषी : स्थान छोड़ने की बात नहीं, कुछ और प्रश्न है, जिसे आप जानते हैं।

सरताज : आप हमें संकेत करें, मैं राखी बाद में बंधा लूंगा।

संतोषी : बाद में स्पष्ट करूंगी पहले राखी बंधा ले वरना आप ड्रामा फैलाएंगे।

सरताज : जब आप मेरी खुशी में खुश हैं, तो ड्रामा क्यों होगा।

संतोषी : मैं राखी बांधती हूं 3 वचन दीजिए, ड्रामा तो नहीं होगा, वरना बच्चे को बहुत परेशानी होगी एक गांठ से जब दूसरी गांठ लगेगी, तो एक वरदान और लूंगी।

संतोषी माता के नाम पर फैलाया गया यह पाखंड भारत के लिए कोई नई घटना नहीं है संतोषी माता ने सुनिश्चित रूप से वे सारे कार्य किए, जो सभी साधारण मनुष्य करते हैं, यहां तक कि उस में कोई भी असाधारण बात नहीं है।

कामरूप कामाख्या के मंदिर में भक्तों को प्रसाद के रूप में एक टुकड़ा दिया जाता है, जिसे देवी की मासिक धर्म का वस्त्र कहा जाता है, कथित संतोषी माता का ऐसा कोई वस्त्र नहीं मिला था, फिर वह कैसी देवी थी।

यदि वह एक वस्त्र धारण किए हुए अन्नजल त्याग किए 6 वर्षों से एक ही स्थान पर बैठी होती तो, उसके वस्त्रों से यह बात पता चल जाती, और यदि 'संतोषी माता' को मासिक धर्म नहीं होता, तो फिर वह कैसी देवी थी जिस में स्त्रियोचित गुण ही नहीं थे वह कैसे 'देवी' और 'मां' का रूप हो सकती है?

संसार का कोई भी तांत्रिक, देवी, भगवान या धर्माचार्य समाज का कुछ भी भला कर सकता होता, तो आज संसार में इतने दुख, कष्ट और अपराध नहीं होते इन की कथित शक्तियां और सिद्धियां भूखों और अंधभक्तों को ठगने के षड्यंत्र के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

साभार : कितने खरे हमारे आदर्श?
पेज संख्या 305 से 320 तक
सं. राकेश नाथ

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

हत्या के कारणों की मीमांसा

''यह मेरा प्रण है कि मैं दबे–पिसे लोगों की सेवा में और उन्हीं के कल्याण के लिए मरूंगा जिनके बीच मेरा जन्म और पालन–पोषण हुआ और जिनके बीच मैं रहा हूँ। मैं अपने इस पवित्र उद्देश्य से एक इंच भी नहीं हटूँगा, और न ही अपने निंदको की उग्र और अपमानपूर्ण आलोचना की परवाह करूँगा''– डॉ. आम्बेडकर 21 मई, 1932 –पुना में दिया गया भाषण।

हमने पिछले अध्याय में देखा की, डॉ बाबासाहब को सात अलग–अलग षड़यंत्रों द्वारा मारने का प्रयत्न किया गया। और वे प्रयत्न किन्हीं प्रकारों से असफल भी हो गये। तब ब्राह्मणवादियों ने समझ लिया की बाह्य आक्रमणों से हत्या करना सम्भव नहीं है इसलिए अंतर्गत आक्रमण की योजना बनाई। हत्या का यह आठवाँ प्रयत्न इन लोगों ने यशस्वी कर दिया। डॉ. बाबा साहब की हत्या करने वाली शक्ति आज भी अस्तित्व में है। बाबासाहब की हत्या के कारण ही उन्हें देश भर में व्यवस्था पर अनियंत्रित अधिकार प्राप्त हो सका। यह भी उतना ही सत्य है। इसलिए उस शक्ति की भयानक विनाश लीला को समझते हुये बाबासाहब की हत्या की कारण मिमांसा हम कर रहे हैं। ये कारण कुछ लोगों को विचित्र लग सकते हैं परन्तु यही सही कारण हैं। यह शोध हमने जिन मूल साधनों के आधार पर किया है, उनसे ही यह आश्चर्यकारक कारणों का खुलासा हुआ है।

डॉ. बाबासाहब, ब्राह्मणी व्यवस्था के लिये बहुत ही बड़ी चुनौती थी। कारण बाबासाहब मूलनिवासी बहुजनों को प्राप्त, एक ऐसे महापुरूष थे, जो 6 हजार जातियों को जोड़ने का महान कार्य कर रहे थे। इस महान कार्य की पूर्ति के लिये उन्होंने आंदोलन शास्त्र का भी विकास किया। देशव्यापी संगठन निर्माण किया। मूलनिवासी बहुजनों में चेतना निर्माण की। गुलाम को गुलाम होने का एहसास करा दिया। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की हत्या ही ब्राह्मण के सामने आखरी पर्याय बचा था। परंतु यह हत्या की योजना बनाते समय उन लोगों ने कुटिल एवं षड़यंत्रकारी बुद्धि का प्रयोग किया। उसने हत्या तो की ही परंतु प्रचार उल्टा किया की नैसर्गिक मृत्यु हुई। ब्राह्मणी व्यवस्था को बचाने के लिये सभी ब्राह्मणों ने उस षड़यंत्र का समर्थन किया। ब्राह्मण परिस्थितिनुसार अपना रंग बदलता है। ब्राह्मण कहीं भी जाये, किसी भी संगठन में जाये, वो ब्राह्मण ही रहता है। इस तरह सभी ब्राह्मणों का उद्देश्य इस व्यवस्था पर वर्चस्व स्थापित करना ही होता है। शिक्षित वर्ग में, ब्राह्मणी व्यवस्था के प्रति आकर्षण पैदा कर उन्हें दलाल व्यवस्था में रूपांतरण करना, यह ब्राह्मणी तंत्र है। परंतु आज भी अशिक्षित वर्ग और आदिवासी वर्ग में, ब्राह्मणों से सावधान रहो' ऐसा तत्वज्ञान जिंदा है। ब्राह्मणों के कपटी चरित्र को दर्शाने वाली देशव्यापी कहावतें प्रचलित हैं। ऐसी कहावतें असंख्य हैं। एक कहावत पूर्वी भारत के झारखंड–आदिवासी भाग में प्रसिद्ध है। देखिये, ''कैइले बामन दिखने वाला, साप खेड़ले तूरे खाबे बामून खेड़ले तूरन गुष्टिरे खावे।'' अर्थात–''ब्राह्मण अधिक जहरीला है की साँप? साँप यदि काटता है तो हम अकेले मरेंगे, परन्तु ब्राह्मण ने यदि काटा तो तुम्हारी पीढ़ी दर पीढ़ी का सत्यानाश तय है।'' आदिवासियों में ब्राह्मणों से सावधान रहो, जो संदेह है वह बहुत मार्मिक है।

डॉ. बाबासाहब की हत्या के कारण

डॉ. बाबासाहब की हत्या के कारण और उसकी पृष्ठभूमि का संक्षिप्त इतिहास जानना और समझना बहुत जरूरी है। उनकी हत्या के कारणों के शोधकार्य में हमें जो जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं, वो निम्न हैं–

1. पूना समझौता का धिक्कार करना अर्थात ब्राह्मण वर्चस्व को नकारना, हत्या का कारण बना।

2. देशव्यापी संगठन निर्माण कर एस.सी.एस.टी. जातियों की समस्याएँ हल की, इसी प्रकार ओ.बी.सी. का मुद्दा उठाने के कारण ब्राह्मणी व्यवस्था को झटका लगा। इसलिये ब्राह्मणों ने उनकी हत्या की।

3. ब्राह्मणी व्यवस्था को नकार कर याने बी.पी.सी (ब्राह्मणीकल पीनल कोड) आय.पी.सी. (इंडियन पीनल कोड) लागू किया। ब्राह्मणी व्यवस्था को कानून के माध्यम से नकारने के कारण हत्या की गई।

4. 'दो वर्षों में मैं भारत को बौद्धमय कर दूंगा'– यह बाबासाहब का विधान, उनकी हत्या का कारण बना।

5. सभी सामाजिक समूह शासक न बनें इसलिए हत्या की गई।

उपरोक्त कारणों का अध्ययन एवं विश्लेषण करने पर ही यही दिखाई देता है कि, इस घटना को अंजाम देने के लिए मात्र एक दो व्यक्तियों का उपयोग नहीं किया गया है परन्तु एक बड़ा समूह इस षड़यंत्र के पीछे कार्यरत था। क्रांग्रेस, यह ब्राह्मणी पक्ष, इस षड़यंत्र में सीधे सहभागी था। रामदासी सेवक संघ का इस काम के लिए पूर्ण समर्थन था।

पूना समझौता में डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के हत्या के कारण छुपे हैं। आईये इस बिंदू पर थोड़ा विस्तार से विचार करें। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने उम्रभर पुणे समझौता का विरोध किया। उनके अनुसार पूना समझौता, मूलनिवासी बहुजनों को प्रतिनिधित्वहीन करता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि, जिस ब्राम्हणी व्यवस्था के हम शिकार हैं, वही ब्राह्मणी व्यवस्था इस पुणे करार के कारण जीवित है। ब्राह्मण का अनियंत्रित वर्चस्व रहता है। इस व्यवस्था से समाज को सच्चे प्रतिनिधी नहीं मिलते हैं। परन्तु उलट उससे टूल, स्टूज, एजंट याने दलाल और भडवे पैदा होते है। तलवे चाटने वाले और दुम हिलाने वाले कुत्ते तैयार होते हैं। 29 अक्टूबर 1951 को पटियाला (पंजाब) में शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन की विशाल सभा बाबासाहब ने ली। उस सभा में पूना समझौता के कारण चुने गये मंत्रियों, नेताओं को 'हरिजन मंत्री' सम्बोधित किया गया। 'हरिजन' शब्द गांधी जी का था। इस हरिजन शब्द का उनके ही विरोध में प्रयोग में लाया गया। पूना समझौता के कारण कांग्रेस के भरोसे पर चुनकर आये उम्मीदवार– 'वे कुत्तों के जैसा अपने स्वामि के पैर चाटते हैं।' ऐसे शब्दों में टीका की।

डॉ. आम्बेडकर की 'पूना समझौता' धिक्कार की विचारधारा आज भी ब्राह्मणवादियों को अखरती है। ब्राह्मणवादियों का वर्चस्व सदा कायम रहे, इसी हेतु से पूना समझौता हुआ था। परन्तु बाबासाहब ने अपनी पूर्ण आयुष्य पूना समझौते का विरोध किया। गांधी और कांग्रेस ने बाबासाहब को दबाने का प्रयत्न किया परन्तु बाबासाहब उनके सामने झुके नहीं। सन 1932 से 1942 तक के इन 10 वर्षों में बाबासाहब ने क्रांग्रेस के विरोध में एक देशव्यापी बड़ी शक्ति खड़ी की। बाबासाहब का नेतृत्व कौशल्य इतना जबरदस्त था की, उनके सामने कांग्रेसी आदमी खड़ा ही नहीं हो सकता था। 18, 19 और 20 जुलाई, 1942 को नागपुर में आल इंडिया शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन का राष्ट्रीय स्तर पर भव्य सम्मेलन हुआ। 75 हजार कार्यकर्ता देशभर से आये थे। कांग्रेस को इस सम्मेलन के कारण डर पैदा हो गया कि अब! इस स्वाभीमानी आंदोलन को दबाना तो कैसे? ''हमारी लड़ाई केवल सत्ता और संपत्ती के लिए नहीं है, वह संपूर्ण आजादी के लिए है।'' जैसे ही बाबासाहब ने घोषित किया कांग्रेस और नेहरू को उसका धक्का लगा। अर्थात यदि बाबासाहब सफल हो गये तो ब्राह्मणों का क्या होगा? ब्राह्मणों के वर्चस्व को यदि धोखा था तो वह केवल मात्र बाबासाहब से ही।

19 मार्च 1947 को 'स्टेट अंड मायनारिटी' यह लेखी मेमोरेण्डम संविधान सभा को बाबासाहब ने दिया। 'पूना समझौता' का धिक्कार किया और इतना ही नहीं तो सन 1946 में संपूर्ण देशभर में पूना समझौता के विरोध में रैली और प्रदर्शन और जेलभरो आंदोलन किया। समग्र गांधी साहित्य में, एक पत्र मिला है, जिसमें खुद गांधी को बाबासाहब के आंदोलन से भय पैदा हो गया था, ऐसा उल्लेख हैं पूना समझौता का इतना बड़ा धक्का कांग्रेसी लोगों को हो गया था। इस देशव्यापी आंदोलन के कारण संपूर्ण भारत में कार्यकर्ता जेल जाने लगे। महाराष्ट्र में आर. आर.भोले के नेतृत्व में पूना समझौता का विरोध किया। उत्तर प्रदेश में आगरा शहर में एक अत्यंत वयोवृद्ध व्यक्ति मास्टर मानसिंग अभी भी जीवित है, उन्होंने पूना समझौता धिक्कार आंदोलन में भाग लिया था और उसे भी जेल हुई थी। कांग्रेस ने पहले सार्वजनिक चुनाव में षड़यंत्र की पराकाष्ठा कर दी और बाबासाहब को संसद में जाने ही नहीं दिया। और इसी उद्देश्य से कांग्रेस ने डांगे इस कम्युनिस्ट ब्राह्मण को भी नियंत्रित कर लिया। इसके बाद बाबासाहब भंडारा (विदर्भ) से आरक्षित मतदार संघ से चुनाव लड़े और पुनः इतना ही नहीं तो सर्वसाधारण मतदार संघ से भी चुनाव लड़े। वहाँ भी कांग्रेस ने भीतर घात लगाकर षड़यंत्र किया। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जैसे व्यक्ति को जिन्होंने लोकतंत्र की निर्मिती भारत में की और एक इतिहास रचा दिया, उन्हें ही उस संसदीय लोकतंत्र से बाहर रखने का षड़यंत्र कांग्रेस ने किया। डॉ. बाबासाहब यदि लोकसभा में गये तो क्या हंगामा होगा इसकी संकल्पना नेहरू को थी। इसी नेहरू ने तीन प्रतिशत युरेशियन ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित कर दिया।
लोकतंत्र से बाहर रखने का षड़यंत्र कांग्रेस ने किया। डॉ. बाबासाहब यदि लोकसभा में गये तो क्या हंगामा होगा इसकी संकल्पना नेहरू को थी। इसी नेहरू ने तीन प्रतिशत युरेशियन ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित कर दिया।

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने दूरदृष्टि से अनुभव कर लिया था कि, भविष्य में कांग्रेस का वर्चस्व देश पर कायम रहा तो, देश का सत्यानाश होगा इसलिये उन्होंने ऐसी भावी रणनीति बनाई जो ब्राह्मणवादियों को बहुत खटकने लगी। बाबासाहब को पुर्वानुमान था इसलिये उन्होंने संविधान सभा में जो भाषण दिया उसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से इशारा किया, 'जिस संविधान में आपने लोगों का, लोगों के लिए चुना हुआ शासन इस तत्व की सुरक्षा की है उसे अगर आप सुरक्षित रखना चाहते हो तो, हमारी राह में कौन सी रूकावटे आनेवाली हैं इस बात को आपकों पहले ही समझ लेना चाहिए, ताकि लोगों ने चुनकर दी हुई सरकार की तुल नामें 'लोगों के लिए सरकार' को लोग अधिक पसन्द करने लगेंगे, इस बात के लिए आप दुर्बल ना हो, देश की सेवा करने का यही सबसे अच्छा एकमेव मार्ग है। दूसरा इससे भी अच्छा मार्ग मुझे पता नहीं।''

यदि लोगों की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो यही लोग लोकतंत्र का मंदिर नष्ट कर देंगे। बाबा साहब का अनुमान सही निकला और उसका कारण पुणे समझौता है।

शेडुल्ड कास्ट फेडरेशन की विविध बैठकें हुई। उन बैठकों में आरक्षित मतदार संघ अर्थात पुणे समझौता का विरोध किया गया। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर का एक साक्षात्कार बी.बी.सी वर्ल्ड लंदन ने लिया। उस ऐतिहासिक साक्षात्कार को हमने बाबासाहब की 19 अप्रकाशित डायरियों की परिशिष्ट में छपाया है। यह भेंट 1955 में ली गई थी। उस भेंटवार्ता में उन्होंने पुणे समझौता का धिक्कार किया था। वर्ष में केवल एक बार संयुक्त मतदार संघ पद्धती के लिए एक कतार में खड़े होने से हमारे जीवन में कौनसा राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक बदल होता है? ऐसा प्रश्न भी उठाकर उस पद्धती का धिक्कार किया है। भेटवार्ता के अंत में उन्होंने यह भी कहा, ''मैंने गांधी को कभी भी महात्मा नहीं कहा और गांधी महात्मा बनने लायक भी नहीं है।''

बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पूर्व ही पुणे समझौता अर्थात आरक्षित मतदार संघ पद्धति नकारने की योजना बनाई गई थी। नये सिरे से अपने राजनैतिक पक्ष की रचना कर विस्तृत आधार पर उसका नियोजन करने की संकल्पना आकार ग्रहण करने वाली थी। इस राजनैतिक दल का नामकरण ध्येय, उद्देश्य, दृष्टिकोण आदि सबकुछ निश्चित हो गया था। यदि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर, पुणे समझौता की यंत्रणा को अर्थात षड़यंत्र को पराजीत करने में यशस्वी हो गये तो वे अपने आयुष्य में ही संसद में बहुमत सिद्ध करने लायक हो जायेंगे। इतना ही क्यों, विरोधी पक्ष की भी स्थापना कर देंगे, इसलिए किस आधार पर यह कहा जा सकता है कि, उनकी हत्या करें ऐसा ब्राह्मणों को नहीं लगा होगा? डॉ. बाबासाहब ने अपनी भावी योजना में कांग्रेस का पत्ता पूरी तरह साफ करने की योजना बनाई थी। अल्पसंख्यक ब्राह्मणों का बहुसंख्यक लोगों पर जो वर्चस्व स्थापित करने का तंत्र है व लोकतंत्र नहीं है, परंतु अलोकतंत्र है। ब्राह्मणों के वर्चस्व को जब–जब धोखा उत्पन्न होता है तब वो हत्याकांड का सहारा लेता है और अपना वर्चस्व बनाये रखता है, यह उनका इतिहास है।

साभार
डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर की हत्या किसने क्यों और कैसे की?
पृ.सं. 189 से 191 तक। प्रो. विलास खरात

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

हम अपने देश में ही गुलाम हैं– कांशीराम

(नागपुर) 9 अक्टूबर 1983

''इस देश में आए दिन विभिन्न स्थानों पर दलितों पर अन्याय अत्याचार किए जा रहे हैं, जो लोग अन्याय, अत्याचार करते हैं वे ही इसके खिलाफ झूठे नारे लगाते हैं। जिन्होंने हमें हजारो वर्षों से गुलाम बनाए रखा, वे ही आज हमारे कल्याण की बात करते हैं। क्या हम उनसे न्याय की अपेक्षा कर सकते हैं? कदापि सम्भव नहीं और अगर हम ऐसा करते हैं तो हम अपने साथ धोखा कर रहे हैं। आज हमें अपने–आपको शक्तिशाली बनाना जरूरी है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमने होशियारपुर तथा नागपुर को 'अन्याय मुक्त क्षेत्र' बनाने का संकल्प किया है और 15 अगस्त 1983 से इस दिशा में पहल भी शुरू कर दी है आने वाले एक वर्ष के भीतर हमने आधे से अधिक भारत को 'अन्याय मुक्त क्षेत्र' बनाने की योजना बनाई।

उपरोक्त आत्म विश्वासपूर्ण विचार मा. कांशीराम जी ने नागपुर में बेझनबाग मैदान पर 9 अक्टूबर 1983 को डी–एस4 द्वारा आयोजित विशाल अन्याय मुक्त क्षेत्र परिषद के उद्घाटन पर व्यक्त किये। इस परिषद में 50000 से अधिक लोग उपस्थित थे। इतना ही नहीं, अपितु देश भर में कई स्थानों से डी–एस4 के प्रतिनिधि आये थे।

शक्तिशाली बनो

'अन्याय मुक्त क्षेत्र निर्माण आन्दोलन' की भूमिका स्पष्ट करते हुए मा. कांशीराम जी ने आगे कहा कि देश में दलितों पर जो वर्षों से अत्याचार किये जा रहे हैं उसकी तह में जाने की कोशिश करने पर पता चलेगा कि इस समाज पर अत्याचार इसलिए होते हैं कि यह कमजोर हैं। जीवन के सभी क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा शिक्षा की दृष्टि से इस समाज को वर्षों से कमजोर रखा। इसका नतीजा यह हो गया कि इनके दिल और दिमाग में यह भावना घर कर गई कि हम तो अन्याय करने वालों के खिलाफ लड़ ही नहीं सकते, फिर भला इस अन्याय से हमारी रक्षा कौन करेगा? इसके लिए हमारी कोई सहायता नहीं करने वाला। जब तक हम स्वयं शक्तिशाली और बलवान नहीं बनते हमारे ऊपर किये जा रहे अन्याय–अत्याचार बन्द नहीं करवाये जा सकते। जब तक हमारे ऊपर अत्याचार करने वालों को इस बात का एहसास नहीं होता कि हम ताकतवर हैं, शक्तिशाली हैं, वे अत्याचार करते ही रहेंगे। हमारी शक्ति का उन्हें अंदाज होना जरूरी है। हम किसी पर अन्याय नहीं करना चाहते, परन्तु अगर कोई हम पर अन्याय करने की कोशिश करता है तो हमें एक ईंट का जवाब दो पत्थर से देना चाहिए। जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे, अत्याचार करने वाले बाज नहीं आयेंगे।

हम अपने देश में ही गुलाम हैं।

अन्याय मुक्त आंदोलन की विस्तार से जानकारी देते हुए आपने कहा कि अन्याय मुक्त क्षेत्र निर्माण का निर्णय मैं और मेरे साथियों ने पर्याप्त विचार विमर्श के पश्चात लिया है। आज हम इस देश में 85 प्रतिशत हैं, फिर भी इस देश में गुलाम हैं। केवल 15 प्रतिशत लोग धन और सत्ता के बल पर दलितों का लगातार शोषण करते आ रहे हैं, कब तक ये अत्याचार हम लोग सहते रहेंगे। कहीं न कहीं तो इसे रोकना जरूरी है। यही सोचकर हमने यह निर्णय लिया। 15 अगस्त 1983 से अन्याय मुक्त आन्दोलन की शुरूआत होशियारपुर (पंजाब) से की। आज नागपुर में ये परिषद हो रही है और शीघ्र ही सम्पूर्ण देशभर में इस आन्दोलन की विचारधारा को प्रसारित किया जायेगा।

85 प्रतिशत के आगे 15 प्रतिशत कैसे टिक पाऐंगे?

85 दलित–शोषित जनता अत्याचार की शिकार क्यों? इसे स्पष्ट करते हुए आपने आगे बताया कि 85 प्रतिशत जनता कई गुटों में बंटी है और संगठित नहीं है। अगर इन बिखरे हुए लोगों को एक कड़ी में पिरोया जाये, संगठित किया जाए तो हमारी शक्ति कई गुना बढ़ जाएगी। अगर हम ये कर पाये तो 15 प्रतिशत अत्याचार करने वाले एक मिनट भी हमारे सामने टिक नहीं पाऐंगे। वे हमारे सामने भी आने की हिम्मत नहीं करेंगे।

इस देश का कारोबार हमारी मर्जी से चलेगा

नागपुर की जनता को 3 अक्टूबर 1982 में कही गई बात याद दिलवाते हुए आपने कहा कि, ''मैंने इस स्थान से आपसे कहा था कि आने वाले तीन वर्ष में इस देश का कारोबार हमारी मर्जी के बगैर नहीं चल पाएगा।'' आज फिर एक बार 1 वर्ष 6 दिन के बाद मैं उसे दोहरा रहा हूँ। शायद आपको ये घोषणा अतिशयोक्तिपूर्ण लगती होगी। परन्तु मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि 3 वर्ष नहीं तो। यह डेढ़ वर्ष में ही हम इस ध्येय की प्राप्ति कर लेंगे। हमें आरक्षित स्थानों की जरूरत नहीं। हम स्वयं की दूसरे के लिए आरक्षित स्थान देंगे।

नागपुर क्यों?

अन्याय मुक्त क्षेत्र के लिए हमने नागपुर को ही क्यों चुना इसका स्पष्टीकरण देते हुए मान्यवर कांशीराम जी ने कहा कि इसके पीछे इतिहास है। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर द्वारा चलाये गए आंदोलन की जड़ें यहाँ की मिट्टी के अंदर तक गई हैं। आंदोलन के प्रति समर्पित तथा हर प्रकार का त्याग बलिदान करने वाले कार्यकर्ताओं का जाल यहाँ तैयार हुआ है। इस क्षेत्र का कार्य नागपुर तक ही सीमित नहीं रहेगा। शीघ्र ही इसका जाल सम्पूर्ण भारत में फैलाया जायेगा।

जनसभा में एड. रतन चन्द गाँधी, सईउद्दीन रेहान, फादर पीटर लेविस, एड. एकनाथ सालवे, प्रो. एम.एम. देशमुख, नलिनीताई लड़के, राम हेडाऊ (पू. सांसद) ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन कु. चन्दा काम्बले ने किया तथा सिद्धार्थ पाटिल ने धन्यावद दिया।

(बहुजन संगठक, वर्ष 4, अंक 30, 31 अक्टूटर, 1983)

साभार : मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण खण्ड–2
पेज संख्या 215 से 217 तक
ए. आर. अकेला

मनुवाद ने हमें दीन–हीन बना दिया–कांशीराम

(उरई)

डी–एस4 के अध्यक्ष मा. कांशीराम जी के दो दिवसीय दौरे में जनपद जालौन में विभिन्न स्थानों पर विशाल जनसभाओं का आयोजन किया गया। प्रथम सभा जालौन तहसील के एक ग्राम गोहन में, 1 नवम्बर 1983 को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक हुई। सभा की अध्यक्षता सुघर सिंह राजपूत (गोहन) ने की।

(गोहन)

अपने आथित्य भाषण में मा. कांशीराम जी ने कहा, ''जो इन्सानियत में विश्वास रखते हैं वे तेजी से हमारे साथ जुड़ते जा रहे हैं यह हमारे लिए खुशी की बात है। दूसरी खुशी की बात यह है कि जिस तरह से मिशन को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं उसी तरह से आप लोग आगे बढ़ा रहे हैं। मनुवाद ने हमें इतना दीन–हीन बना दिया है कि इतने दीन–हीन दुनिया में कहीं भी देखने को नहीं मिलते। दुख की बात यह है कि हम इस देश के मूलनिवसी हैं और हम अपने ही देश में मुठ्ठी भर लोगों के गुलाम बने हुए हैं। ऐसी स्थिति में हमें मनुवाद ने लगभग 6 हजार जातियों में बांट दिया है, और हमें इकट्ठे होना है। आपके जनपद में यह देखकर खुशी होती है कि सभी जातियों के लोग नजर आ रहे हैं।''

आगे आपने कहा, ''सारे देश में अपने लोगों का उत्साह एवं साहस देखकर मुझे 24 सितम्बर 1982 को पूना मे मजबूर होकर कहना पड़ा कि जो लोग इस मूवमेंट को रोकना चाहते हैं वह रोक नहीं सकते। मुझे पूरी आशा है कि दलित–शोषित समाज का यह मिशन 2 साल के अन्दर इतना मजबूत हो जायेगा कि इस देश का कारोबार दलित–शोषित समाज की मर्जी के बिना कोई चला नहीं सकता।''

आधा भारत देश 15 अगस्त 1984 तक अन्याय–अत्याचार से मुक्त

दलित–शोषित जनता की समस्या को संख्या के अनुपात में स्पष्ट करते हुए आपने कहा कि दलित–शोषित समाज देश में लगभग 60 करोड़ हैं। इनको थोड़े समय में एक स्थान पर लाना बहुत बड़ी बात है। फिर भी मैंने 15 अगस्त 1983 से यह निश्चित किया है कि 15 अगस्त 1984 तक लगभग आधे देश को इतना मजबूत बनाना है कि उन पर कोई अन्याय करने की हिम्मत न कर सके। यह कार्य आप सबके सहयोग से हो सकता है।

आगे आपने कहा कि आपके साथ जो अन्याय होता है, उसका कारण आपकी कमजोरी है। हमें उस कमजोरी को दूर कर ताकत में बदलना है। हमारे बुजुर्गों की अथक कोशिश से बीमारी तो दूर हो चुकी है लेकिन कमजोरी रह गयी है। यह कमजोरी कोई दूसरा दूर नहीं करेगा। यह कार्य हमें ही स्वयं करना पड़ेगा। हमें दूसरे को दोषी न ठहराकर अपने को ही दोषी ठहराना है और अपनी कमजोरी दूर करना है।

सम्मेलन को डी.सी.वीरेन्दु ने भी सम्बोधित किया तथा शिवराम सिंह कुशवाहा ने आभार प्रकट किया।

(जालौन)

जालौन में आयोजित जनसभा में हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे सिद्धार्थ विद्यापीठ की छात्राओं ने स्वागत गीत गाकर सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि मा. कांशीराम जी थे। उन्होंने अपने आथित्य भाषण में कहा– ''इतने बड़े समाज को संगठित करने के लिए एक मजबूत संगठन की जरूरत है और समाज को आगे बढ़ाने के लिए संघर्ष की जरूरत है, कामयाब संघर्ष के लिए हमने एक मजबूत संगठन की आवश्यकता समझी और डी–एस4 नाम से संगठन बनाया है। आज जैसा संगठन हम बनाना चाहते थे, वैसा बनता हुआ नजर आ रहा है। यह खुशी की बात है।

सभा की अध्यक्षता जंगबहादुर सिंह यादव (जालौन) ने की तथा रामनाथ सुमन, श्रीमती रामजीलाल तथा बब्बा संगीत पार्टी ने ओजस्वी गीत रखे। खेमराज सिंह, भन्ते आनन्द, माता प्रसाद जाटव व कनौजिया जी ने अपने विचार व्यक्त किये।

(कालपी)

2 नवम्बर, 1983 को दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक जालौन जिले में कस्बा कालपी में तीसरी सभा आयोजित की गयी जिसमें हजारों की संख्या में लोग उपस्थित हुए।

इस अवसर पर मा. कांशीराम जी ने अपने आथित्य भाषण में विस्तारपूर्वक डी–एस4 की विचारधारा की जानकारी दी तथा इस समाज पर अन्याय–अत्याचार क्यों होते हैं? इस सम्बन्ध में बताते हुए आपने कहा कि डी–एस4 इस अत्याचार का इलाज है।

जनसभा में रामनाथ सोनकर, होरीलाल, राजबहादुर प्रजापति ने अपने गीतों से सभा को प्रभावित किया। अमानुल्ला खाँ ने अपने ओजस्वी भाषण से जनसाधारण को प्रभावित किया। संचालन डी.सी. वीरेन्दु ने किया।

(बहुजन संगठक, वर्ष 4, अंक 32, 14 नवम्बर, 1983)

साभार :
मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण खण्ड–2
पेज संख्या 222 से 224 तक
ए. आर. अकेला

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

नारी का दर्द देखा नहीं गया... और वे रो पड़े : आनंद रहाटे

मा. कांशीराम जी को अलग–अलग लोग अलग–अलग ढंग से जानते हैं आंबेडकरवादी लोग उन्हें बाबासाहब के मिशन को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने वाले बहुजन नेता के रूप में जानते हैं। मनुवादी उन्हें कट्टरपंथी दलित नेता के रूप में जानते हैं। जातिवाद की राजनीति खेलने का आरोप भी उन पर अक्सर किया जाता है। सत्ताधारी उन्हें कड़े सौदेबाज के रूप में जानते हैं। समय आने पर प्रधानमंत्री को रूलाने की ताकत वे रखते हैं, विरोधी उन्हें सनकी नेता कहते हैं, राजनीतिक समीक्षक आज तक उनकी राजनीतिक चालें समझ नहीं पाये, उनकी राजनीति को समझना टेढ़ी खीर है, वे कहते हैं, कांशीराम जी कब क्या करेंगे इसका भरोसा नहीं, जो लोग कांशीरामजी को कमजोर समझकर उन पर हावी होने की कोशिश करते हैं, वे स्वयं अन्त में पटकनी खाते हैं, यही किस्सा भाजपा के साथ हुआ, बसपा को बरगलाने की नियत से भाजपा ने उत्तरप्रदेश में गठबन्धन किया, मगर आज वे अपने किये पर पछता रहे हैं, गठबन्धन का छमाही लेखाजोखा करने के बाद आज वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उनकी गठबन्धन की कूटनीति के सौदे में उन्होंने सूद तो पाया नहीं बल्कि मूल धन भी खोया है, आज के भारत की सारी राजनीति कांशीराम जी के इर्दगिर्द घूम रही है, वे जैसा चाहते हैं वैसे राजनीति का चक्र घूमता है, आज वे भारत की राजनीति के अभिन्न अंग बन चुके हैं, उनकी राजनीति के रंग समझने की पुरजोर कोशिश आज इस देश का हर राजनीतिक पूरी शक्ति से कर रहा है।

भले ही उनकी राजनीति से आहत कुछ लोग उन्हें तिकड़मबाज राजनीतिज्ञ कहते हैं, मगर मा. कांशीरामजी का यह असली रूप नहीं है, उनका असली मन बहुत कम लोग जानते हैं, वही चन्द लोग जानते हैं जिन्हें उनके निकट संपर्क में रहने का मौका प्राप्त हुआ है, ऐसे कुछ अनमोल लम्हें चुनने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ है, निश्चित रूप से मा. कांशीराम जी आज उस ऊँचाई तक पहुँच गये हैं, जहाँ पर पहुँचकर उन्होंने इस देश के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। आज उनके जीवन का हर लम्हा इतिहास का पन्ना बन जाता है। अपनी योग्यता से इतिहास के स्थान बनाने वाले लोग सामान्य नहीं होते। उनका जीवन खुली किताब की तरह होता है। उनके जीवन का हर पन्ना रोचक एवं प्रेरक होता है।

निर्माता दिलीप मेंढे के निर्देशन मे हम 'इंसाफ की आंधी' फिल्म बना रहे थे, छत्तीसगढ़ बिलासपुर जिले के अन्तर्गत आने वाले शिव नारायण गांव के मेले में मीनाकुमारी खुंटे नामक आदिवासी महिला पर मंदिर के पुजारी, गांव के ठाकुर एवं लाला केसरवानी नामक बनिया लोगों ने मिलकर वह शियाना बलात्कार किया था। रोती बिलखती मीनाकुमारी जब इन्साफ की गुहार करती हुई पुलिस थाने मे शिकायत लेकर पहुँची तो भ्रष्टचारी थानेदार ने गांव के प्रतिष्ठित सवर्णों का पक्ष लेते हुए उसे डांट दिया।

मीनाकुमारी चीख–चीखकर इन्साफ मांगती रही, मगर सत्ता के दरिन्दों को रहम नहीं आया, अन्त में मीनाकुमारी ने अपना जीवन समाप्त करने का प्रयास किया, मगर उसे उसके पति महादेव खुंटे ने बचा लिया।

जब कानून ने मीनाकुमारी को इन्साफ देने से दुत्कार दिया तब बहुजन समाज पार्टी को छत्तीसगढ़ इकाई ने इस घटना को लेकर तीव्र आंदोलन किया, सारे छत्तीसगढ़ में 'इन्साफ की आंधी' का निर्माण हुआ, मीनाकुमारी की इज्जत लूटने वाले दरिन्दों को जेल के सलाखों के भीतर पहुँचा कर ही बसपा कार्यकर्ताओं ने दम लिया।

जब कानून ने मीनाकुमारी को इन्साफ देने से दुत्कार दिया तब बहुजन समाज पार्टी की छत्तीसगढ़ इकाई ने इस घटना को लेकर तीव्र आंदोलन किया, सारे छत्तीसगढ़ में 'इन्साफ की आंधी' का निर्माण हुआ, मीनाकुमारी की इज्जत लूटने वाले दरिन्दों को जेल के सलाखों के भीतर पहुँचा कर ही बसपा कार्यकताओं ने दम लिया।

इसी घटना पर आधारित फिल्म 'इंसाफ की आँधी' का हम निर्माण कर रहे थे। फिल्म के निर्माता मा. दिलिप मेंढ़े थे निर्देशक यश निकोसे थे। कैमरा अनिल कुमार एवं कुन्दन सोनटके संभाल रहे थे, इस फिल्म का दृश्य फिल्माया जाने वाला था।

बलात्कारिता मीनाकुमारी की भूमिका में शैल जैमिनी काम कर रही थी, रमेश लखमापुरे इन्सपेक्टर के रोल में तैयार था।

निर्देशक यश निकोसे ने मा. कांशीराम जी के हाथों में क्लैंपींग बोर्ड दिया, आर्ट डायरेक्टर सुरेश मून द्वारा पुलिस स्टेशन का सैट बनाया गया था। अब मा. कांशीराम जी क्लैंपिंग करके फिल्म का उद्घाटन करने वाले थे। शॉट रेडी निर्देशक चिलाया, प्रेक्षकों में शान्ति छा गयी।

निर्देशक फिर चिल्लाया ''केमरा...लाईट...साउण्ड एण्ड एक्शन...'' इसके साथ ही मा. कांशीरामजी ने क्लैपिंग बोर्ड पर पट्टी पकड़कर क्लैपिंग दी। तत्काल शॉट शुरू हुआ। साहब स्टेज के सामने कुर्सी पर बैठ गये।

रोती बिलखती मीनाकुमारी पुलिस थाने के दरवाजे पर खड़ी थी। उसके वस्त्र तार–तार हो चुके थे, आँखों में खून जमा था। अपनी लुटी हुई इज्जत पर वह खून के आँसू बहा रही थी। बेबसी, क्रोध, प्रतिरोध एवं वेदना के संमिश्र भाव उसके मायूस चेहरे पर झलक रहे थे, उसका बस चलता तो वह धरती का सीना फाड़ देती। थरथराते हुए उसने कहा– ''थानेदार साहब हमारी इज्जत लूट गवा दानव ने हमरा इन्साफ दो थानेदार चिल्लाता है...साली रंडी की औलाद...शरीफ लोगों को बदनाम करती है...चल भाग यहां से वर्ना जेल में ठूँस दूँगा।''

''हमरा साथ नाइन्साफी हुई सरकार...हमरा इन्साफ दो...हमरा इन्साफ दो...'' मीनाकुमारी आक्रोश करते हुए इन्साफ मांग रही है, उसका आक्रोश आसमान के दिल को छेद करता है, ऐसा करूण दृश्य है कि पत्थर भी पिघल जाये।

मा. कांशीरामजी यह दृश्य देख रहे थे, हर पल उनके चेहरे के भाव बदल रहे थे, मानों यह दृश्य जिन्दा होकर उनके जेहन को डंस रहा हो। चेहरे पर वेदना की लकीर गहरी होती जा रही थी। मीनाकुमारी के बेबस आँसू देखकर वे आहत हुए थे। उसका आक्रोश सीधा उनके दिल पर पहुँचा था। उनका दिल छलनी हो रहा था।

मैं साहब के बाजू में खड़ा होकर उन्हें समझा रहा था। साहब के चेहरे के बदलते रूप रंग मेरी नजरों से छिपे नहीं रहे। चेहरे से स्वयं पता चल रहा था कि साहब के मन को असीम पीड़ा हो रही है और अधिक पीड़ा वे बर्दाशत नहीं कर पाये। मीनाकुमारी का हाल देखकर उनकी आँखें डबडबा गयीं। लाख कोशिश के बावजूद वे अपने आँसू रोक नहीं पाये। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं आश्चर्य से देखता रह गया। पहाड़ जैसा दिल रखने वाला आदमी एक बेबस लड़की का दर्द देखकर रो रहा था। उन आँसुओं में करूणा थी। स्नेह था। प्रतिरोध था दिल को छू लेने वाली तड़प थी। बेबस लोगों के आँसू पोंछने के लिए ही उन्होंने अपना जीवन कुर्बान कर दिया था। नाइन्साफी का दमनचक्र तोड़ने के लिये कृतसंकल्प होकर वे आगे बढ़ रहे थे। इन्हीं आँसुओं ने मनुवादियों की जड़े हिलाकर रख दी थीं। कितने अनमोल थे वे आँसू।

यह मेरे जीवन की अनमोल घड़ी थी। ऐसी भावुक घड़ी जिसे पलकों पर सजाकर दिल में संजोया जा सकता है।

साभार : बहुजन नायक
मान्यवर कांशीराम स्मृति ग्रंथ
पेज संख्या 57 से 58
एस. एस. गौतम

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

यूनिवर्सल इंस्टीटियूट, ऑफ पैरामेडीकल साइंसिज
एफिलिएटिड to NIOS मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन (MHRD) गोव्ट ऑफ इंडिया
Courses Are Available Here
CCH (सर्टीफिकेट इन कम्युनिटी हैल्थ –1 1/2 वर्ष)
अंग्रेजी दवाईयों से प्राथमिक उपचार को मान्य।
DNYS (डिप्लोमा नेचुरोपैथी योगिक साइंस – 2 1/2 वर्ष)
डिप्लोमा रेडियो ग्राफ्री, एक्स–रे टैक्नीशियन – (2 वर्ष)
DMLT (डिप्लोमा मैडीकल लैब टैक्नोलॉजी – 2 वर्ष)
DYS (डिप्लोमा योगिक साइंस – 2 वर्ष)
CATP (आयुर्वेदिक थैरेपी, पंचकर्मा टैक्नीशियन (1 – वर्ष)
YTT (योगा टीचर्स ट्रैनिग – 1 वर्ष)
CHD (होम्योपैथी – 1 वर्ष)
CCA (कम्प्यूटर – 1 वर्ष)
NIOS
पात्रता 10+2 प्रवेश परीक्षा
अप्रैल, मई, अक्टूबर, नवंबर
E-mail- hsy2010@rediffmail.com
नोट :– हर कोर्स पास करने के बाद 6 माह की एन्ट्रेन्शिप आवश्यक
निकट माया गार्डन अतवार नगर भदेशी रोड अलीगढ़ मो. 9368250940

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।